पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

आषाढ़-श्रावण, कलियुगाब्द 5119, जुलाई, 2017

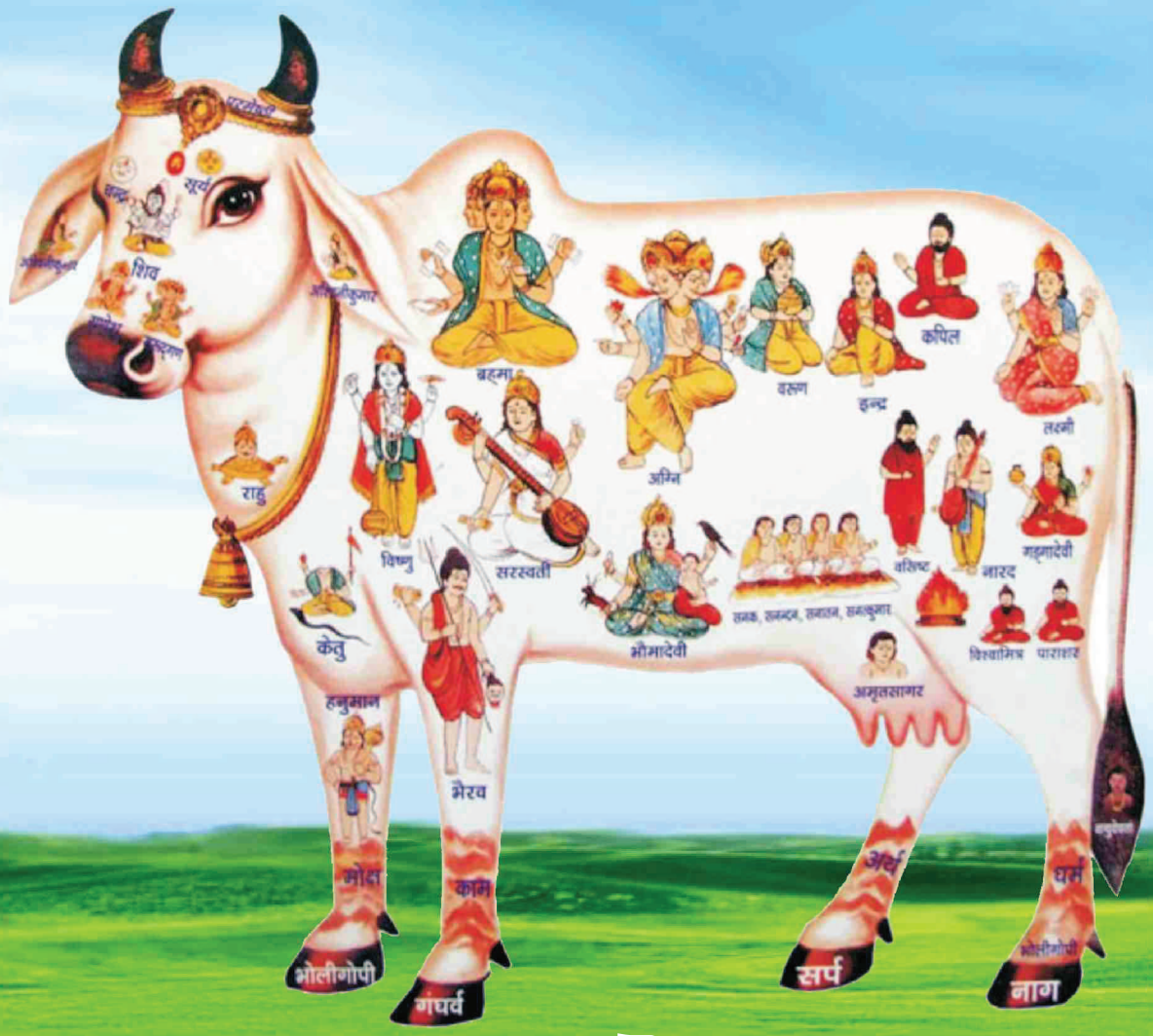

अघन्या है गाय

एसजेवीएन विश्व पटल पर
पवन ऊर्जा
ताप ऊर्जा
सौर ऊर्जा
विद्युत ट्रांसमिशन
जल ऊर्जा
2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि
412 मेगावाट रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश
महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना
हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
आरएचपीएस को ''जल विद्युत परियोजनाएं शीघ्र पूरी करने'' की श्रेणी में ''गोल्ड शील्ड'' तथा ''सिल्वर शील्ड''।
ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए 'गोल्ड शील्ड' पुरस्कार।
विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 12 विद्युत परियोजनाओं का निर्माण-कार्य।
एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU
सीआईएन: L40101HP1988GO1008409
शक्ति सदन, एसजेवीएन कॉरपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला-171006
www.sjvn.nic.in

स्थावरं जंगमं व्याप्तं येन कृत्स्नं चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः

इस चराचर जगत में चल-अचल वस्तु या निर्जीव और सजीव जिनकी कृपा से व्याप्त है, उन श्री गुरू के चरणों में मेरा नमस्कार है।

वर्ष : 17 अंक : 7

मातृवन्दना

आषाढ़-श्रावण, कलियुगाब्द 5119, जुलाई 2017

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा

पत्रिका प्रमुख
राजेन्द्र शर्मा

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

अघ्न्या है गाय...

गाय की रक्षा करना हमारा धर्म है किन्तु कई स्थानों पर गौरक्षकों द्वारा कानून अपने हाथ में लेने की घटनाओं से दिशाहीनता व कर्त्तव्य विमुखता का ही संदेश जाता है। प्रयास यह होना चाहिए कि जो स्वयं पालित गोधन को आवारा भटकने के लिए छोड़ देते हैं, उनको नकारा समझ कर चारा-घास तृणादि का प्रबन्ध नहीं करते हैं अथवा उनको कसाई के हाथ बेच देते हैं, ऐसे लोगों को जगजाहिर किया जाये और उन्हें अपने पशुधन को पाले जाने के लिए बाध्य किया जाये। वस्तुत: सच्चे गोरक्षक वे हैं जो कसाईयों अथवा गाय का विक्रय करने वाले लोगों से छुड़ाई गई गायों का स्वयं संरक्षण एवं पालन करें।

सम्पादकीय	अघ्न्या है गाय	3
प्रेरक प्रसंग	मृणालिनी देवी को पत्र	4
चिंतन	युवाओं को संस्कारों	5
आवरण	विरोध प्रदर्शन या पशु	6
संगठनम्	राष्ट्रहित और किसान	11
पुण्य स्मरण	प्रेरणादायी अन्नपूर्णा माता	12
देश-प्रदेश	शिमला को मिली नई	13
देवभूमि	किन्नौर में पूजित सावणियां	15
घूमती कलम	वैदिक वर्ण व्यवस्था	17
संस्कृतम्	विदेशों में देववाणी	19
विविध	कामयाबी का नया युग	21
काव्य जगत	खिलें फूल डाली-डाली	22
स्वास्थ्य	दुनिया में सबसे श्रेष्ठ	23
कृषि	जैविक खाद एवं उसका	24
महिला जगत	मानवाधिकार एवं महिलाएँ	26
विश्वदर्शन	हिन्दू स्वयंसेवक संघ	27
समसामयिकी	जम्मू कश्मीर के दो	28
युवापथ	डलहौजी की शिखा	30
बाल जगत	एकता में शक्ति	31

पाठकीय

पाठकीय

सम्पादक महोदय,

सरस्वती विद्या मन्दिर कुमारसैन में भी अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम बडे उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पतंजलि योग समिति इकाई कुमारसैन की संगठन मन्त्री श्रीमती लज्जा निर्मोही व प्रभारी श्रीमती रेखा श्याम भी कार्यक्रम में उपस्थित रहीं। उन्होंने जीवन में योग के महत्व के बारे में छात्रों के समक्ष अपने विचार रखे। विद्यालय के छात्रों व अध्यापकों ने साथ मिलकर योगाभ्यास किया। तत्पश्चात छात्रों के लिए, योग विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें अनमोल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस दौरान विद्यालय के प्रधानाचार्य ने भी छात्रों को सम्बोधित किया। उन्होंने छात्रों को बताया कि योग दुनिया को भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है। योग के माध्यम से व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक दृष्टि से स्वस्थ बना रह सकता है। कार्यक्रम के अन्त में सभी उपस्थित लोगों व छात्रों ने योग को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। ❖ ***प्रीतम सेठी, सविमं, कुमारसेन***

महोदय,

मैं मातृवन्दना का पिछले कई वर्षों से पाठक हूँ। पिछले वर्ष आपके कार्यालय में आजीवन शुल्क जमा कर मातृवन्दना की सदस्यता प्राप्त की थी। वर्ष भर पत्रिका सुचारू रूप से प्राप्त हुई। इस वर्ष की पत्रिका में विलम्ब हुआ कृपया जाँच कर बताएं कि कहाँ त्रुटि रही ताकि भविष्य में नियमित पहुँचती रहे। ❖ ***लक्ष्मी चंद, बांध, कसौली***

महोदय,

मार्च मास में दलाई लामा जी की अरूणाचल प्रदेश की यात्रा के समाचार समाचार पत्रों में पढ़कर उनकी याद ताजा हो आई। छह-दशक से तिब्बतियों के लंबे संघर्ष का नेतृत्व करने वाले दलाई लामा जी ने राजनीति से सन्यास ले लिया किन्तु वे तिब्बतियों के आध्यात्मिक गुरू हैं और तिब्बत की स्वायत्तता के लिए कुछ भी कर सकने के लिए उद्यत रहेंगे। अपना पद त्याग कर तिब्बती संसद को भेजे पत्र में उन्होंने कहा 'यह तिब्बत के लिए भविष्य का प्रश्न है।' राजनीतिक कार्यों से दूर रहने की घोषणा तिब्बत के लिए एक ऐतिहासिक महत्व की बात है। कुछ सालों से उनके हृदय में पद छोड़ने की इच्छा बलवती हो रही थी परन्तु नेताओं के आग्रह के कारण मौन थे। जुलाई मास में पूज्य श्री का जन्मोत्सव मनाया जाता है। मातृवन्दना में भी उनके विषय में कुछ जानकारी प्रकाशित की जा सकती है। सुझाव है। ❖ ***स्वरूप नारायण पिशन, विजयनगर, गाजियाबाद***

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को श्री गुरू पूर्णिमा, नाग पंचमी (गुग्गा नवमी) एवं मिंजर महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्मरणीय दिवस (जुलाई)

हरिशयनी एकादशी	*4, जुलाई*
गुरू पूर्णिमा	*9, जुलाई*
पौरी उत्सव	*13, जुलाई*
लोकमान्य तिलक जयन्ती	*23, जुलाई*
कारगिल विजय दिवस	*26, जुलाई*
मिंजर महोत्सव	*27, जुलाई*
नाग पंचमी (गुग्गा नवमी)	*28, जुलाई*
गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती	*30, जुलाई*

अघ्न्या है गाय

अपने धर्म में गाय, गंगा और गायत्री का अत्यन्त महात्म्य है, इन तीनों के प्रति अटूट आस्था है। वेदों में ''रूपायाघन्ये ते नमः'' कहकर गौ की देववत पूजा का विधान है, वह अघ्न्या है अर्थात् इसका वध नहीं किया जाता। ऋग्वेद में उस स्थल को परम पवित्र माना गया है जहाँ गाय निवास करती है। स्मृति ग्रन्थों और पुराणों में गाय की महिमा का गुणगान किया गया है। धार्मिक-पक्ष के अतिरिक्त यदि आर्थिक-पक्ष का भी आकलन किया जाए तो गाय सम्पूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में आज भी विगत काल के अनुरूप सहायक सिद्ध हो सकती है। वर्तमान ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गोपालन और पंचगव्य पद्धति (दूध, घी, दही, गोमूत्र और गोबर) में ऐसी क्षमता है, जो हमारे गांव को पुनः आत्मनिर्भर बना सकती है। ये पांचों द्रव्य कृषि, ऊर्जा, चिकित्सा, घरेलू-उपयोगी वस्तु निर्माण आदि क्षेत्रों में रोजगार के मूल-आधार बन जायें तो ग्रामीण क्षेत्र का परिदृश्य ही बदल जाये। गाय वास्तव में ही कामधेनु है जो मनुष्य की कामनाओं को पूर्ण करने का सामर्थ्य रखती है। गाय की महिमा एवं उपयोगिता को अधिमान देते हुए ही केन्द्रीय सरकार ने पशुओं के प्रति क्रूरता रोकने एवं पशुओं के विक्रय से सम्बन्धित नये अधिनियम को बनाया है।

इन नियमों को केन्द्रीय सरकार सम्भवतः पूर्णरूपेण परिभाषित नहीं कर पाई है। यही कारण है कि राज्य की अदालतें भी इस फैसले पर एकमत नहीं दिखाई देती हैं। मद्रास उच्च न्यायालय का कहना है कि सरकार लोगों के खाने की आदत को तय नहीं कर सकती। केरल उच्च न्यायालय कहता है कि इन नियमों में बीफ खाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं। अधिसूचना को रद्द करने से जुड़ी याचिका को खारिज करते हुए इस उच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि पशु क्रय-विक्रय पर पाबन्दी की अधिसूचना संवैधानिक उल्लंघन नहीं है। राजस्थान उच्च न्यायालय तो गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने और पशुहत्या करने वाले को आजीवन कारावास देने के हक में है। विपक्ष इस मुद्दे पर ओछी राजनीति कर रहा है। केरल में युवा कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं ने सरेआम बछड़ा काटने की काली करतूत कर जिस प्रकार विरोध जतलाया, उसकी सर्वत्र निन्दा की गई है। केवल मात्र विरोध की राजनीति से देश का भला नहीं हो सकता। बहुसंख्यक हिन्दू समाज की आस्था की प्रतीक 'गाय' के प्रति क्रूरतापूर्ण कृत्य देश-हित में नहीं। महात्मा गांधी स्वयं गाय की पूजा करते थे। उनका कहना था कि गाय भारत की रक्षा करने वाली है तथा इस कृषि प्रधान देश की रीढ़ है।

गाय की रक्षा करना हमारा धर्म है किन्तु कई स्थानों पर गौरक्षकों द्वारा कानून अपने हाथ में लेने की घटनाओं से दिशाहीनता व कर्त्तव्य विमुखता का ही संदेश जाता है। प्रयास यह होना चाहिए कि जो स्वयं पालित गोधन को आवारा भटकने के लिए छोड़ देते हैं, उनको नकारा समझ कर चारा-घास तृणादि का प्रबन्ध नहीं करते हैं अथवा उनको कसाई के हाथ बेच देते हैं, ऐसे लोगों को जगजाहिर किया जाये और उन्हें अपने पशुधन को पाले जाने के लिए बाध्य किया जाये। वस्तुतः सच्चे गोरक्षक वे हैं जो कसाईयों अथवा गाय का विक्रय करने वाले लोगों से छुड़ाई गई गायों का स्वयं संरक्षण एवं पालन करें। चारागाह और चारे की कमी को देखते हुए सरकारों को भी चाहिए कि वे कुटुम्बशः पशुधन की गणना और उनको चिह्नित करने का समुचित प्रबन्ध करे व साथ ही चरागाहों पर अवैध कब्जों को हटाते हुए, पंचायत स्तर पर गौशालाओं का निर्माण करवायें। गाय पालने वाले कृषकों का यह परम कर्तव्य बन जाता है कि उतना ही पशुधन अपने पास रखें जिसका वे पूर्णतया पालन एवं संरक्षण कर सकें। बाँझ गाय तथा बैल बछड़ों को बेसहारा न छोड़ें। सरकार ऐसे लोगों के साथ सख्ती से निपटे। सर्वोच्च न्यायालय एवं सरकार इस सम्बन्ध में विवेकपूर्ण निर्णय लेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

मृणालिनी देवी को पत्र

ईसवी सन् 1905 के 30 अगस्त के दिन अरविन्द बाबू ने अपनी पत्नी को जो पत्र लिखा था, उसे पढ़ने से हम उनकी मन: स्थिति की ठीक-ठीक कल्पना कर सकेंगे, 'अब तक एक बात तुम्हारे ध्यान में आ गई होगी की एक विचित्र व्यक्ति के साथ तुम्हारा आजन्म गठबन्धन हुआ है। इस प्रकार के लोक विलक्षण पुरूष के साथ जिसका विवाह हुआ है, उसे जन्म भर कष्टों के अतिरिक्त भला दूसरा क्या प्राप्त हो सकता है?परन्तु इसके लिए उपाय भी क्या है? है, एक उपाय है; वह अपने प्राचीन ऋषि मुनियों का बताया हुआ है। अपने पति को गुरू मानकर चलो। अपने देश में पत्नी पति की सहधर्मचारिणी कहलाती है। पति के धर्म कार्य में उत्तम सहायक होना उसका कर्तव्य है। अच्छे सचिव के समान सुविचार सुझाना, उसे सहायता देना, उसे ईश्वर मानकर उसकी सेवा करना तथा उसके सुख दु:खों में सानन्द सहभागी होना, ये पत्नी के कर्त्तव्य हैं.....

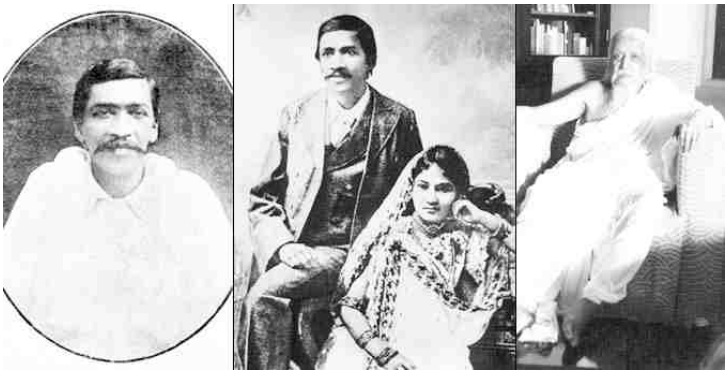

इस समय तीन धारणाएं मेरे मन में जमकर बैठ गई हैं, एक यह कि मेरी गुणसंपत्ति, मेरी बुद्धिमत्ता, मेरी उच्च शिक्षा, विद्वत्ता आदि सब बातें मेरी नहीं हैं, परमेश्वर की हैं। इन सब चीजों में से अपने लिए जो अत्यावश्यक हो, उतना ही मुझे लेना है। बाकी सब कुछ उस परमपिता के चरणों में समर्पित करना है।'

कदाचित् तुम पूछोगी, 'कि भगवान् को अर्पण करने का क्या अर्थ है।' भगवान् को अर्पण करने का अर्थ है, 'अपनी सब शक्तियां किसी ईश्वरी कार्य के लिए लगा देना। अपने शरीर, मन और बुद्धि का उपयोग अच्छे कामों के लिए देश-धर्म के कार्यों के लिए तथा परमेश्वर प्राप्ति के लिए करना....' बिल्कुल सामान्य व्यक्ति जैसा रहूं, उनके जैसी रूखी सूखी खाऊँ, बहुत सादे कपड़े पहनूं, और देह धारण के लिए आवश्यक उतना ही खर्च करूं और जो बचेगा वह सब भगवान् के लिए लगा दूं, यही मेरे मन की अभिलाषा है...'

इस देश में तीस कोटि भाई-बन्धु रहते हैं। उनमें से कई लोग भूखे हैं, नंगे हैं, वे कई दिनों तक निराहार रहते हैं, और अन्त में भूख से तिलमिलाते हुए प्राण छोड़ देते हैं। नानाविध दु:खों से घिरी हुई जनता न जाने कैसे अपना पीड़ामय जीवन व्यतीत करती है। जैसे-तैसे वह जी रही है। उसे दु:खमुक्त करना, तथा उसका कल्याण साधना, मेरा कर्तव्य है... इन दिनों में दूसरा एक पागलपन मुझ पर सवार हो गया है।

मेरी तीसरी धारणा है, 'कि मेरी मातृभूमि के विषय में। अन्य लोग अपने देश को एक निर्जीव पदार्थ मात्र मानते हैं। परन्तु मैं अपनी इस भारत भूमि को अपनी माता समझता हूं। इसी धारणा से मैं अपनी भक्ति करता हूं। इसी भावना से मैं उसकी पूजा करता हूं। जब माता संकट में हो तब भला उसके पुत्रों को क्या करना चाहिए?माता की तनिक भी चिन्ता न करते हुए, क्या अपने आहार-विहार में मग्न रहना चाहिए? मुझे अनुभव हो रहा है, कि अपने इस हिन्दू समाज का उद्धार करने का सामर्थ्य मुझमें अवश्य है। सामर्थ्य का मतलब शारीरिक सामर्थ्य से नहीं है। तलवार और बन्दूक उठाकर युद्ध करने की मेरी इच्छा नहीं है। मैं देश के शत्रुओं के साथ अपनी ज्ञानशक्ति से लड़ना चाहता हूं। शस्त्र तेज इस विश्व का एकमात्र तेज नहीं है, ब्रह्मतेज भी तेज है, उसका आधार है ज्ञान.....?'

'अब इस सम्बन्ध में तुम्हारा निश्चय क्या है, बताओ। स्त्री अपने स्वामी की शक्ति रहा करती है। बोलो क्या तुम मेरी शक्ति बनोगी?क्या तुम मेरा उत्साह द्विगुणित करोगी?' ❖

साभार: योगी अरविन्द, लोकहित प्रकाशन

युवाओं को संस्कारों का अर्थ समझाओ

-के.सी. शर्मा गग्गलवी

आज एक बात की चर्चा आम है कि हम धीरे-धीरे संस्कार विहीन समाज की रचना कर रहे हैं। हम यानी मैं अपने समय की बात करूं कि हमें संस्कार कहां से मिले जबकि इस प्रकार की कोई पाठशाला नहीं थी, जहां से हमें संस्कारों का ज्ञान प्राप्त होता, ना ही कोई ऐसा पाठ्यक्रम हमारी पाठशालाओं में उपलब्ध था। दरअसल हम संयुक्त परिवारों मे जन्में, पले और बड़े हुए। हमें संयुक्त परिवार के सदस्यों से संस्कार मिले, जिनमें मां-बाप, दादा-दादी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची, बुआ ये रिश्ते एक छत के नीचे कायम थे। छोटे-बड़े की संयुक्त परिवार की मर्यादा थी लिहाज। प्रत्येक सदस्य का आत्म सम्मान एक महत्वपूर्ण गुण था। दूसरा गुण था सभी कमाते थे और सभी मिल बैठ कर खाते थे। आत्म-निर्भरता के प्रश्न का उत्तर था सभी की जरूरतें एक छत के नीचे रह कर पूरी हो जाएं तो किसी एक को यह कभी नहीं लगेगा कि मेरे भविष्य का क्या होगा। शब्द मैं की जगह हम या जिस में एक शक्ति, एक प्राण, एक साधना और एक विश्वास था।

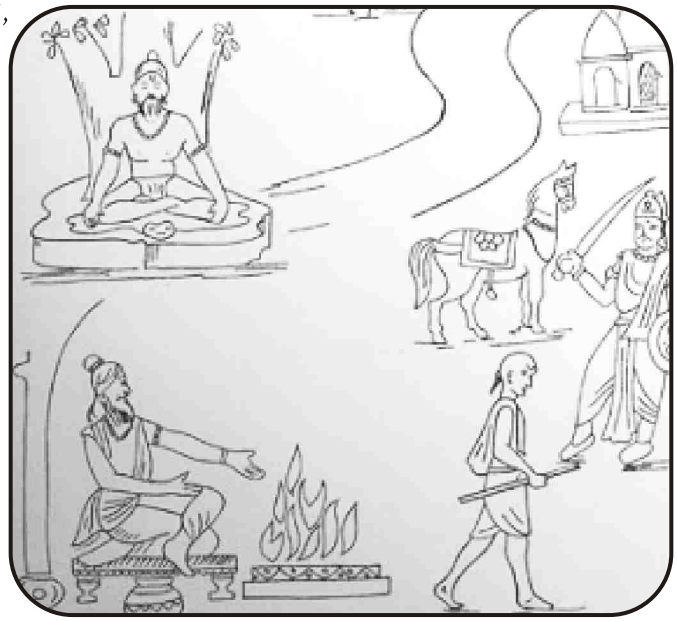

आज मैं शब्द जिसका दायरा छोटा, सदस्य के रूप में मैं, तुम और वह। सब से छोटी इकाई परिवार की। आज के परिवार में पति-पत्नी और एक या दो बच्चे। ऐसी संरचना में सदैव असुरक्षा की भावना, आत्मनिर्भरता हेतु भाग-दौड़। इस लघु परिवार में सीखने सीखाने का प्रश्न कहां उठता, कौन किस को क्या सिखाए। प्रश्न संस्कार है क्या बूढ़ों के पांव छूना संस्कार है? महिलाएं सदैव घूंघट ताने रखें? हां की जगह, जी हां कहना संस्कार है? बड़े कुर्सी पर बैठें और छोटे जमीन पर यह संस्कार है। सुबह पूजा-पाठ करना, राम नाम का जाप करना संस्कार है?

हम भूल रहे हैं कि संस्कार है-कर्तव्य, निष्ठा, मानवता, धैर्य, न्याय, सत्संगत, संरचना, पालन-पोषण, ज्ञान एवं विज्ञान की प्राप्ति। सर्वोपरी है हमारे एक दूसरे के प्रति कर्तव्य, समानता, भेदभाव रहित व्यवहार, सदाचार, सहानुभूति, आदर-सम्मान। अपना धर्म, अपना राष्ट्र, अपनी व्यक्तिगत पहचान, समाज, सरकार, कानून व्यवस्था सभी कुछ जो मानवता को मान्य है। हम समाज के अनुरूप हैं, कानून के दायरे में हैं, यह है हमारे संसकार जिन का दर्शन हमारे कर्मों से होता है। कर्म की प्रधानता का वर्णन भगवत गीता में है। कर्म से स्वयं की पहचान, कर्म से ही व्यवसाय की पहचान। सार्थक कर्म का अर्थ अच्छे संस्कार! प्रधानमंत्री का अर्थ है मंत्री मंडल में श्रेष्ठ, राष्ट्रपतिः पूरे राष्ट्र का सम्मानित व्यक्ति। यह दर्जे, यह उपाधियां सभी अच्छे और श्रेष्ठ कर्मकर्ताओं को प्राप्त होती हैं। संस्कारों का सरल अर्थ है ईमानदारी और सच्चाई से तथा दूसरों को हानि पहुंचाए बिना परिश्रम करते हुए सीमित इच्छाओं के साथ सुखद जीवन यापन। ❖

विरोध प्रदर्शन या पशु क्रूरता का प्रकटीकरण

-डॉ॰ लोकेन्द्र सिंह

पशुओं को क्रूरता से बचाने के लिए केंद्र सरकार के आदेश का विरोध जिस तरह केरल में किया, कोई भी भला मनुष्य उसे विरोध प्रदर्शन नहीं कह सकता। यह सरासर क्रूरता का प्रदर्शन था। इसे अमानवीय और राक्षसी प्रवृति का प्रकटीकरण कहना, किसी भी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं होगा। केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री के विरोध में राजनेता इतने अंधे हो जाएंगे, इसकी कल्पना भी शायद देश ने नहीं की होगी। कम्युनिस्टों का चरित्र इस देश को भली प्रकार मालूम है। केरल में जिस प्रकार कम्युनिस्ट संगठनों ने केंद्र सरकार के आदेश का विरोध करने के लिए 'बीफ फेस्ट' का आयोजन किया, सार्वजनिक स्थलों पर गौमांस का वितरण किया, निश्चित तौर पर विरोध प्रदर्शन का यह तरीका निंदनीय है। लेकिन, कम्युनिस्ट पार्टियों के इस व्यवहार से देश को आश्चर्य नहीं है। कम्युनिस्टों का आचरण सदैव ही इसी प्रकार का रहा है, भारतीयता का विरोध।

केरल में कम्युनिस्ट जब अपनी विचारधारा से इतर राष्ट्रीय विचारधारा से संबंध रखने वाले इंसानों का गला काट सकते हैं, तब गाय काटने में कहां उनके हाथ कांपते? उनका इतिहास यही सिद्ध करता है कि हिंदुओं का उत्पीड़न उनके लिए सुख की बात है। लेकिन, कम्युनिस्ट आचरण का अनुसरण करती एक पुरानी पार्टी का व्यवहार समझ से परे है। देश की बहुसंख्यक हिंदू आबादी यह देखकर दु:खी है कि एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल, जिसे उसने लंबे समय तक देश चलाने के लिए जनादेश दिया, आज वह उसकी ही आस्था और भावनाओं पर इस प्रकार चोट कर रहा है। एक जमाने में कांग्रेस का चुनाव चिह्न 'गाय और बछड़ा हुआ करता था और उससे पहले 'बैलों की जोड़ी'। अपने प्रारम्भिक दिनों में कांग्रेस गौवंश को अपना चुनाव चिह्न बनाकर हिंदू समाज से मत प्राप्त कर सत्ता में आती रही। कांग्रेस के कई नेता समूचे देश में गौ-हत्या को रोकने के लिए एक कठोर कानून की इच्छा रखते थे, लेकिन कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व के कारण यह संभव नहीं हो सका। बहरहाल, बाद में कांग्रेस का नया चिह्न हो गया, हाथ का पंजा। कांग्रेस ने नारा दिया है- 'कांग्रेस का हाथ, गरीब के साथ'। लेकिन, वर्तमान परिस्थितियों में ऐसा प्रतीत नहीं होता है। कांग्रेस के नेता और कार्यकर्ताओं ने जिस प्रकार नारेबाजी कर केरल में बीच सड़क पर गाय का गला रेता है, उससे समूचे देश में आक्रोश की लहर उत्पन्न हो गई है।

यहां सवाल यह भी है कि केंद्र सरकार का आदेश सिर्फ गाय के प्रति क्रूरता रोकने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका आदेश सभी पशुओं के प्रति संवेदनशील भाव रखने के लिए है। केंद्र सरकार के पर्यावरण मंत्रालय ने वध के लिए पशुओं की खरीद-फरोख्त पर रोक लगाने का जो आदेश जारी किया है, वह गौवंश के साथ ही भैंस, बकरी और ऊंट सहित अन्य पशुओं के संदर्भ में लागू होता है। फिर

कांग्रेस ने 'गाय के गले पर ही चाकू' क्यों चलाया? यूं तो अपनी राजनीति के लिए किसी भी जीव की हत्या उचित नहीं, फिर भी कांग्रेस को यदि विरोध प्रदर्शन का राक्षसी तरीका ही अपनाना था, तब वह भेड़, बकरी, सूअर भी चुन सकती थी। कांग्रेस ने गाय की ही हत्या क्यों की? क्या यह एक विशेष वर्ग को लुभाने के लिए राजनीतिक दल का एक कदम था? तकरीबन 100 करोड़ हिंदुओं को आहत करके कांग्रेस चंद वोटों की खातिर एक वर्ग के तुष्टीकरण के लिए इतना नीचे गिर जाएगी, इसकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। गौ-सेवक बहुसंख्यक समाज की भावनाओं से खिलवाड़ क्या सांप्रदायिकता की श्रेणी में नहीं आता? बहरहाल, कांग्रेस का यह व्यवहार राष्ट्रीय राजनीति के लिए ठीक नहीं है। केरल में गौहत्या और गौमांस वितरण से देश में जो रोष उत्पन्न हुआ है, भविष्य में कांग्रेस को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। शायद कांग्रेस को भी इसका आभास हो गया है। इसीलिए उसके उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने इस घटना की आलोचना की है और कहा है- 'केरल में जो हुआ वो क्रूर है और मैं या मेरी पार्टी ऐसी किसी भी चीज को बर्दाश्त नहीं करेगी। मैं कड़े शब्दों में इस घटना की आलोचना करता हूं।' हालांकि, राहुल के बयान पर यही कहा जा सकता है- 'मेहरबां बहुत देर कर दी आते-आते...,

तकरीबन 100 करोड़ हिंदुओं को आहत करके कांग्रेस चंद वोटों की खातिर एक वर्ग के तुष्टीकरण के लिए इतना नीचे गिर जाएगी, इसकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। गौ-सेवक बहुसंख्यक समाज की भावनाओं से खिलवाड़ क्या सांप्रदायिकता की श्रेणी में नहीं आता? बहरहाल, कांग्रेस का यह व्यवहार राष्ट्रीय राजनीति के लिए ठीक नहीं है। केरल में गौहत्या और गौमांस वितरण से देश में जो रोष उत्पन्न हुआ है, भविष्य में कांग्रेस को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

राहुल गांधी की ओर से यह आलोचना इसलिए भी देश स्वीकार करने की स्थिति में नहीं है, क्योंकि प्रारंभ में इन्होंने इस क्रूरता की हकीकत पर पर्दा डालने का ही प्रयास किया था। एक तरफ केरल के कांग्रेस के नेता कह रहे थे कि उन्हें अपने किए पर किसी प्रकार की शर्मिंदगी और पछतावा नहीं है, वहीं कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता कह रहे थे कि गौहत्या में कांग्रेस के कार्यकर्ता शामिल हैं, अभी इसकी पुष्टी नहीं हुई है। सोशल मीडिया पर कांग्रेस की फौज अपने अपराध पर क्षमा भाव प्रदर्शित करने की जगह बड़ी बेशर्मी से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं पर झूठी अफवाह फैलाने का आरोप लगा रही थी। जबकि सच सबके सामने था। केरल के अखबार ही नहीं, केरल के कांग्रेसी नेता भी 'क्रूरता के प्रकटीकरण में स्वयं की सहभागिता स्वीकार कर रहे हैं। तथाकथित सबसे अधिक साक्षर राज्य केरल की इस घटना के बाद देश की जनता ने स्पष्ट संदेश दिया है कि भारत में गौहत्या किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं है। जनता की भावनाओं का सम्मान करने के लिए केंद्र सरकार को आगे आना चाहिए और संविधान में संशोधन कर समूचे देश में गौ-संरक्षण के लिए एक समान कानून बना कर लागू करना चाहिए। न्यायालय भी यह बात कह चुके हैं कि देश मे गौहत्या और गौमांस की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए केंद्र सरकार को विचार करना चाहिए। यकीनन देश में गौहत्या पर हो रही राजनीति से समाज में सांप्रदायिक खाई गहरा रही है। गौहत्या पर राजनीति उचित नहीं। इसका समाधान गौहत्या पर एक कानून ही है। यह उचित समय है, जब इस प्रकार का कानून बनाया जा सकता है। केंद्र सरकार यदि गौ-संरक्षण के लिए एक कानून बनाने का निर्णय करती है, तब देश की जनता का भरपूर समर्थन उसे प्राप्त है। ❖

शास्त्रसम्मत है गौ महिमा

– डॉ॰ उमेश कुमार पाठक

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की विकसित परंपरा में गाय का स्थान अप्रतिम है। लेकिन दुर्भाग्यवश आज इस पूरे संदर्भ को सांप्रदायिक सीमा से युक्त कर तथाकथित सेक्युलर बुद्धिजीवियों का एक समूह इसे हिंदूधर्म और हिंदुत्व का प्रतीक मानता है। दरअसल भारतीय संस्कृति व हिंदू जीवन दर्शन भी निश्चित तौर पर प्रभावित होंगी तथा हमारा सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवहार भी इससे अछूता नहीं रह सकता। कहना गलत न होगा कि समकालीन परिवेश में गाय के सनातन महत्व को धर्म विशेष से आवृत्त कर तथाकथित सेक्युलर वामपंथियों द्वारा पूरे मामले को विवादास्पद बनाकर, मिथ्याचार को बढ़ावा देकर, भारतीय सामान्य जन को न केवल दिग्भ्रमित किया जा रहा है, बल्कि भारत की समेकित संस्कृति व हिंदू जीवन दर्शन की व्यापक मूल्य दृष्टि की श्रेष्ठता को भी खंडित करने का प्रपंच जारी है।

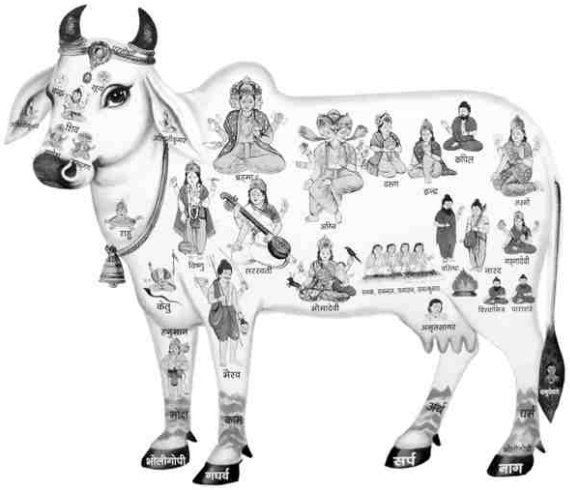

दरअसल पूरी मानव जाति के लिए गाय से बढ़कर उपकार करने वाली, दीर्घायु और निरोगता प्रदान करने वाला कोई अन्य जीव नहीं है। यही वजह है कि अपने जीवन दर्शन में गाय को देवता और माता के समकक्ष माना गया है तथा 'गोसेवा' को परम धर्म माना गया है। इतना ही नहीं, गाय की महिमा का गुणगान महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में किया है– 'गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिंधु मानुष तनुधारी।।' अर्थात् गाय, ब्राह्मण और देवताओं की रक्षा के लिए ईश्वर मनुष्य का शरीर धारण करते हैं। इस प्रकार भारतीय जनमानस में मौजूद धार्मिक–सांस्कृतिक चेतना भी गाय की लोकप्रियता का एक सबल आयाम है। गाय की उपयोगिता एवं महत्व को अपनी जीवन संस्कृति में जिस प्रकार से रेखाकिंत किया गया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

विवेचनात्मक संदर्भ में 'गो महिमा' गाय का महत्व शास्त्रसम्मत है। विश्वकल्याण के निहितार्थ गाय की महिमा का उल्लेख करते हुए शास्त्रों में 'गो हत्या' का निषेध है। उदाहरण प्रस्तुत है–

''देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमताय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या

इंद्राय भागं प्रजावतीरनमीवां अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघशं सो

ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात।'' (शु.यजु. 1/1)

अर्थात् प्राणियों को सत्कार्य में प्रवृत्त कराने वाले सविता देव आपको (गाय) हरित शस्य संपन्न विस्तृत क्षेत्र कर्मों का अनुष्ठान होता है। आप इंद्र के क्षीरमूलक भाग में वृद्धि करने वाली हों यानी कि दूध देने वाली हों। आपकी कोई चोरी न कर सके, व्याघ्रादि जैसे हिंसक

जीव भी आपको न मार सकें, क्योंकि आप तमोगुणी दुष्टों द्वारा मारे जाने योग्य नहीं हो। आप बहुत संतान उत्पन्न करने वाली हैं जिनसे पूरे विश्व का कल्याण होता है। आप जहां रहती हैं, वहां किसी भी प्रकार की व्याधि का आगमन नहीं हो सकता।

गाय ईश्वर की सर्वोत्तम सृष्टि है। यह हमारे लिए जीवनदायनी है। भारतीय चिंतन धारा में इसके अनेक रूप दिखाई देते हैं। मानव की संपूर्ण जीवनयात्रा में गौ महिमा का सारतत्व वेदों में निरूपित है। भारतीय संस्कृति में गाय को पृथ्वी के समतुल्य स्वीकार किया गया है–

''इड एहम दित एहि काम्या एत। मयि वः कामधरणं भूयात।।''(शु.यजु. 3/27)

अग्नि आदि देवताओं के लिए पूजनीय, सबका पोषण करने वाली ऐश्वर्यमयी गाय की हत्या को निंदनीय माना गया है–

''अपस्त्रमिंदुमहष्भुंरण्युंअग्निमीडे षूर्वचितिं नमोभिः।'' स पर्वभिदऋतुशः कल्पमानी गां मा हंम् सीरददितिं विराजताम्।''(शु.यजु. 13/43)

यानी कि क्षय रहित ऐश्वर्य से संपन्न रोष रहित अथवा आराधना करने योग्य पूर्व महर्षियों से चयन के योग्य अन्नों से सबका पालन करने वाले अग्नि द्वारा स्तुति करता हूं। वह अग्नि पर्व द्वारा प्रत्येक ऋतु में कर्मों का संपादन करता हुआ अखंडित अदीन दुग्धदानादि से विराजमान दस ऐश्वर्य होने से गाय का स्वरूप विराट है। इसलिए गाय को मत मारो।

दरअसल दैनिक जीवन में भी गाय हमारे लिए बहुउपयोगी है। 'अथर्ववेद' में लिखा गया है–

'यूयं गावो भेद कृशं चिदक्षीरं चि कृणुथा सुप्रतीकम्।

भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहदो वय उच्यते सभाषु।।''

अर्थात् गाय के दूध से कमजोर मनुष्य बलवान और हृष्ट पुष्ट होता है तथा फीका और निस्तेज मनुष्य ओजस्वी बनता है। गाय से ही देवता उत्पन्न हुए हैं। छः अंगों सहित वेदों की उत्पत्ति भी गाय से मानी गई है। साथ ही गाय के शरीर में देवताओं का वास माना गया है–

'शृंगमूलं गवा नित्यं ब्रह्मविष्णु समाश्रितौ।

शृंगाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च।।

अर्थात् गौओं के सींग के मूल में ब्रह्मा और विष्णु निवास करते हैं, सींग के अग्र भाग में सब तीर्थ स्थावर विराजमान हैं।

'शिरोमध्ये महादेवः सर्वभूतमयः स्थितिः।

ग्वामंगेषु निष्ठान्ति भुवनानि चतुर्दश।।

यानी कि गाय के शिर के मध्य में सारे विश्व के साथ महादेव शिवजी निवास करते हैं। गाय के अंग में चौदहों भुवनों का वास है। इतना ही नहीं, हमारे ग्रंथों में गाय को एक ओर जहां स्वर्ग की सीढ़ी स्वीकार किया है, वहीं दूसरी ओर उसे मनवांछित फल देने वाली माना गया है। इसलिए गाय से बढ़कर इस धरा पर कोई और जीव नहीं है–

'गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेअपि पूजिताः।

गावः कामदुहो देव्यो नान्यत्किंचित्परं स्मृतम्।।❖

अर्थात् गाय के दूध से कमजोर मनुष्य बलवान और हृष्ट पुष्ट होता है तथा फीका और निस्तेज मनुष्य ओजस्वी बनता है। गाय से ही देवता उत्पन्न हुए हैं। छः अंगों सहित वेदों की उत्पत्ति भी गाय से मानी गई है। साथ ही गाय के शरीर में देवताओं का वास माना गया है

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक

शिमला के राममंदिर में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक का उद्घाटन विगत दिनों प्रो(डॉ0)अनिरूद्ध देशपाण्डे एवं हिमाचल विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष प्रोफेसर प्रेमकुमार धूमल पूर्व मुख्य मंत्री ने राष्ट्रीय पदाधिकारियों के सान्निध्य में दीप प्रज्जवलित कर किया। अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख प्रोफेसर अनिरुद्ध देशपाण्डे ने मार्ग दर्शन उपस्थित कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन प्रदान किया। इस बैठक में मुख्यत: वार्षिक योजना व समीक्षा की गई एवं शैक्षिक महासंघ के कार्य विस्तार हेतु एक विस्तृत खाका प्रस्तुत किया गया। विभिन्न प्रांतों में समय-समय पर हुए कार्यक्रमों, धरना, प्रदर्शनों, गोष्ठियों की समीक्षा की गई। साथ-ही-साथ सुझाव व अनुभव साझा किए गए। कार्यक्रम विशेष का वृत्त भी प्रस्तुत किया गया जिससे उपस्थित कार्यकत्ताओं को अपने प्रांत में भी इस प्रकार के कार्यक्रम करने का कौशल प्राप्त हो। इस बैठक में शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ॰ विमल प्रसाद अग्रवाल एवं राष्ट्रीय महामंत्री राजीव सिंघल विशेष रूप से उपस्थित रहे। बैठक में सम्पूर्ण भारतवर्ष से विभिन्न प्रदेशों के प्रांत स्तरीय उपस्थित कार्यकर्ताओं की संख्या 150 रही। ❖

अखिल भारतीय साहित्य परिषद संगोष्ठी

अखिल भारतीय साहित्य परिषद की द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कवि सम्मेलन कुल्लू के देव सदन में आयोजित किया गया। इस संगोष्ठी का विषय पर्यावरण और हमारी भूमिका था। सम्पूर्ण देश से प्रख्यात साहित्यकार एवं कवि इस संगोष्ठी में सहभागी हुए। कार्यक्रम का सुभारम्भ परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री श्रीधर पराडकर एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री ऋषि कुमार मिश्र

के द्वारा दीप प्रज्जवलन कर किया गया। तत्पश्चात् स्थानीय विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सरस्वती वंदना का गायन हुआ।

प्रथम सत्र में राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीधर पराड़कर को भारत के राष्ट्रपति द्वारा हिन्दी साहित्य में उनके उल्लेखनीय योगदान हेतु स्वामी विवेकानन्द हिन्दी सेवी सम्मान से सम्मानित करने के फलस्वरूप साहित्य परिषद की कुल्लू इकाई द्वारा श्रीधर पराड़कर का अभिनन्दन किया गया। पर्यावरण विषय पर उपस्थित साहित्यकारों ने अपने उत्कृष्ट लेखन एवं रचनाओं की अभिव्यक्ति पर सभागार में उपस्थित साहित्य प्रेमी एवं कुल्लू के गणमान्य नागरिकों को हतप्रभ कर दिया। पेरिस का अंतर्राष्ट्रीय जलवायु सम्मेलन एवं भारत की वैदिक पर्यावरणीय शिक्षा पर अधिकांश साहित्यकारों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। अथर्ववेद में वर्णित पृथ्वी सूक्त 'माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्या:' का भी सारगर्भित उल्लेख किया गया। कवि सम्मेलन में उपस्थित कवियों ने समकालीन विषयों पर

कविता पाठकर सभी श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। साहित्यकार एवं कवियों में प्रमुख रूप से डॉ॰ श्रीराम परिहार, डॉ॰ साधना बलवटे, डॉ॰ अनिल कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट से बलदेव भाई शर्मा एवं दिल्ली विश्वविद्यालय से डॉ॰ नीलम राठी ने अपनी वक्तृत्व कला से नव साहित्य रचनाकारों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के अंत में साहित्य परिषद हिमाचल प्रदेश की अध्यक्षा डॉ॰ रीता सिंह ने संगोष्ठी को सफल बनाने हेतु आए हुए सभी अतिथियों एवं कुल्लू के स्थानीय प्रशासन एवं देवसदन प्रबंधन समिति का आभार प्रकट किया गया। ❖

राष्ट्रहित और किसान हितों में नहीं है कोई अंतर : बद्रीनारायण चौधरी

भारतीय किसान संघ देश का सबसे बड़ा किसान प्रतिनिधि संगठन है ऐसे में जो मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र में किसान आंदोलन हो रहे हैं और राजस्थान में आंदोलन शुरू होने जा रहा है उसे लेकर देश में कई भ्रांतियां फैलायी जा रही हैं। यह विचार भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय महामंत्री बद्रीनाथ ने विश्व संवाद केंद्र शिमला में एक पत्रकार वार्ता में रखे। उन्होंने कहा कि किसानों का कभी भी हिंसक आंदोलनों और राष्ट्रीय संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले विरोधों में हाथ नहीं रहा है। भारतीय किसान संघ 1979 से देश में कार्य कर रहा है लेकिन आजतक कभी भी किसानों की ओर से अहिंसक आंदोलन नहीं किये गये हैं। उन्होंने कहा कि देश में कुछ ऐसे नीति निर्माता रहे हैं जिनके कारण किसान को फसलों के समर्थन मूल्य प्राप्त नहीं हो पाते हैं। वर्तमान में भी कुछ ऐसी घटनायें रही हैं जिनमें फसलों का बंपर उत्पादन तो हो गया लेकिन समर्थन मूल्यों के कारण किसानों को समस्यायें रही। उनका कहना था 3 वर्ष पूर्व वर्षा न होने के कारण दलहन का उत्पादन देशभर में गिर गया था। इसके बाद प्रधानमंत्री ने किसानों से दलहन उत्पादन में वृद्धि करने की मांग की थी। गत वर्ष अच्छी मानसून के कारण दलहन का उत्पादन तो बढ़ गया मगर सरकार ने विदेशों से दालें आयात कर ली। साथ ही देश में भंडारित फसलों पर किसानों को सही समर्थन मूल्य नहीं मिल पाया। जिसके कारण किसान अपनी मांगों को लेकर देशभर में अहिंसक तरीके से विरोध के रास्ते पर थे। भारतीय किसान संघ ने पूरे देश में अहिंसक तरीके से हर मंच पर किसान के हितों की मांग रखी।

दिल्ली के जंतर-मंतर में किसान संघ की ओर से देश की ससंद से किसानों की मुश्किलों को दूर करने के लिए विशेष सत्र की मांग भी की गयी लेकिन सत्र में किसान हितों को हाशिये पर ही रखा गया। उन्होंने मध्य प्रदेश में घटी घटनाओं को दुखद बताते हुए कहा कि वहां पर जो 6 किसानों की गोली लगने से मौत हुई है वह बहुत दु:खद घटना है। ऐसी घटनाओं में किसानों को आगे करके केवल कुछ स्वार्थी तत्व अपने हितों की पूर्ति करना चाहते हैं। किसानों का आंदोलन राष्ट्र को नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं है। वे अपनी मांगे शांति पूर्ण आंदोलनों से सरकार के सामने रखते हैं जिसमें भारतीय किसान संघ की सकारात्मक भूमिका रहती है। देश में आज किसान के नाम हालात बने हैं उसके पीछे किसान नहीं हैं बल्कि कुछ ऐसे तथाकथित लोग हैं जो अपने राजनीतिक स्वार्थों को पूरा करना चाहते हैं। इस प्रैस वार्ता में भारतीय किसान संघ के हिमाचल प्रांत के प्रदेशाध्यक्ष भगतराम पटियाल एवं प्रांत संगठन मंत्री हरिराम मौजूद रहे। ❖

प्रेरणादायी अन्नपूर्णा माता

हिमाचल प्रांत के प्रान्त प्रचारक रहे श्री श्रीनिवास मूर्ति जी की पूज्य माताजी श्रीमती वेंकम्मा का गत 18 जून प्रात: 6.30 को 91 वर्ष की आयु में बंगलुरू के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। अभी भी उनकी चलने फिरने की स्थिति पूर्णत: ठीक थी। स्व॰ वेंकम्मा का जन्म कार्तिक मास ईसवी सन् 1925 को हुआ था। उच्च जीवट की धनी, मिलनसार एवं सेवा भावी वेंकम्मा अपने पति की सन् 1970 में मृत्यु के पश्चात् 6 पुत्रों एवं 4 पुत्रियों सहित पूरे परिवार की देखभाल एवं भरण-पोषण का कार्य स्वयं ही सम्पन्न किया करती थी। वह घर आये अतिथि को बिना भोजन किये जाने नहीं देती थी। वरिष्ठ प्रचारक स्व0 यादवराव जोशी एवं स्व॰ शेषाद्री जी का घर पर सतत् सम्पर्क होने के कारण बाल श्रीनिवास मूर्ति एवं नागराज संघ के स्वयंसेवक बने, जिसके पश्चात् दोनों स्वेच्छा से संघ के प्रचारक निकले, लेकिन माताजी ने उनके निर्णय में किसी प्रकार व्यवधान नहीं डाला। माताजी निर्धनों एवं असहाय लोगों की सेवा-सुश्रुषा के लिए सदैव उद्यत रहती थीं। इसी कारण घर का वातावरण भी संस्कारमय है, जो संतानों में भी परिलक्षित होता है। परिवार में वर्तमान में पुत्र-पुत्रवधु एवं पोते-पोतियों सहित सदस्यों की संख्या 44 है। समाज में हुए इस सकारात्मक परिवर्तन की वाहक प्रेरणापुंज स्व॰ वेंकम्मा के निधन पर मातृवन्दना संस्थान अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित करता है। ❖

स्वर्गवासी हुई सहृदयी एवं सेवाभावी जय देवी

राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ हिमाचल प्राँत के सह कुटुम्ब प्रबोधन प्रमुख श्री धर्मपाल की माताजी श्रीमती जयदेवी का 72 वर्ष की आयु में अस्वस्थता के चलते शिमला के आईजीएमसी अस्पताल में 21 जून की रात्रि 9.45 बजे देहावसान हो गया। स्व॰ श्रीमती जयदेवी कर्मठ एवं धर्मपरायण महिला थी, पति के देहांत के पश्चात् चारों पुत्रों का लालन-पालन, अध्ययन का दायित्व स्वयं ही निभाया करती थी। संतानों को दी गयी शिक्षा तथा उनके सेवा एव सदाचारी भाव के संस्कारों के कारण चारों सुपुत्र धर्मपाल, महेन्द्र, अनिल व राकेश बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गये। अब बहुएं व उनके बच्चे भी संघ एवं राष्ट्रीय सेविका समिति से जुड़ गये हैं। परिवार में स्वाभाविक रूप से संघ के स्वयंसेवकों एवं मित्रों का आना-जाना लगा ही रहता है। लेकिन माताजी ने कभी भी बच्चों को प्रताड़ित नहीं किया कि अपने साथ किस-किस को घर ले आते हो जिससे स्वयंसेवकों एवं मित्रों को भी वहाँ अपनापन सा लगता था। माताजी सामाजिक रूप से भी सक्रिय थीं एवं घर आये व्यक्ति की सेवा तल्लीनता से करती थीं। उनके देहावसान के पश्चात् परिवार में आई रिक्तता को ईश्वर निश्चित ही पूर्ण करेंगे। ऐसी मृदुभाषी, सेवाभावी एवं की त्याग की प्रतिमूर्ति स्व0 श्रीमती जयदेवी के निधन पर मातृवन्दना संस्थान की ओर से विनम्र श्रद्धाँजलि। ❖

शिमला को मिली नई मेयर कुसुम सदरेट

शिमला नगर निगम के 31 वर्षों के इतिहास में पहली बार टिक्कर की कुसुम सदरेट शिमला शहर की प्रथम महिला मेयर बनी हैं। निर्वाचित होने के पश्चात् पहली बार मीडिया को सम्बोधित करते हुए मेयर ने कहा कि शिमला शहर के हर नागरिक को पीने के लिए साफ पानी उपलब्ध करवाना उनकी पहली प्राथमिकता रहेगी। मेयर चुने जाने के बाद पहली बार मीडिया से रूबरू हुई मेयर कुसुम सदरेट ने कहा जलसंकट की समस्या को दूर किया जाएगा।

शहर में पानी की नियमित सप्लाई देने के लिए हरसंभव प्रयास किया जाएगा। कहा कि पार्किंग की कमी शहर में विकराल रूप

धारण कर चुकी है। हल निकालने के लिए सभी वार्डों में पार्किंग के लिए नए स्थान तलाशे जाएंगे। शहर में स्फाई व्यवस्था को दुरुस्त बनाया जाएगा। केंद्र सरकार के स्वच्छ भारत अभियान के तहत वार्डों में विशेष अभियान चलाए जाएंगे।

शहर की सुंदरता को बनाए रखने के लिए किसी भी तरह का समझौता नहीं होगा। मेयर ने कहा कि निगम चुनाव के लिए भाजपा की ओर से तैयार किए गए संकल्प पत्र को पूरा किया जाएगा। कुसुम सदरेट ने अपनी जीत का श्रेय शिमला की जनता तथा कार्यकर्ताओं को दिया। इसी के साथ पंथाघाटी वार्ड से विजयी पार्षद राकेश शर्मा को डिप्टी मेयर चुना गया है। ❖

एनडीए के राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी रामनाथ कोविंद

यह लगभग तय हो चुका है कि रामनाथ कोविंद देश के अगले राष्ट्रपति बनेंगे। आपको बताते हैं कि कौन हैं रामनाथ कोविंद। रामनाथ कोविंद वर्तमान में बिहार के राज्यपाल हैं, वे 8 अगस्त, 2015 को बिहार के राज्यपाल नियुक्त हुए। रामनाथ कोविंद यूपी से दो बार राज्यसभा सांसद चुनकर गए। सन् 1977 में इमरजेंसी के दौरान जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद वह तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के निजी सचिव बने थे। इसके बाद वे बीजेपी नेतृत्व के संपर्क में आए। ऑल इंडिया कोली समाज के अध्यक्ष हैं रामनाथ कोविंद। रामनाथ कोविंद सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट में 16 साल तक वकालत की प्रैक्टिस कर चुके हैं। उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात जिले के परौख गांव में सन् 1945 में रामनाथ कोविंद का जन्म हुआ है।

रामनाथ कोविंद तीन भाइयों में सबसे छोटे हैं। परौख गांव में कोविंद अपना पैतृक मकान बारातशाला के रूप में दान कर चुके हैं। रामनाथ कोविंद से बड़े उनके दो भाई प्यारेलाल और स्वर्गीय शिवबालक राम हैं

रामनाथ कोविंद की शुरुआती पढ़ाई-लिखाई संदलपुर ब्लॉक के खानपुर गांव परिषदीय प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक विद्यालय में हुई थी। कानपुर नगर के बीएनएसडी इंटरमीडिएट परीक्षा पास करने के बाद डीएवी कॉलेज से बी.कॉम व डीएवी लॉ कॉलेज से विधि स्नातक की पढ़ाई पूरी की। बाद में दिल्ली में रहकर उन्होंने आईएएस की परीक्षा तीसरे प्रयास में पास की। लेकिन मुख्य सेवा के बजाय एलाइड सेवा में चयन होने पर रामनाथ कोविंद ने नौकरी ठुकरा दी थी। ❖

शिमला स्मार्ट शहर घोषित

शिमला शहर को केन्द्र सरकार ने स्मार्ट सिटी घोषित कर दिया है। 23 जून को जारी केन्द्रीय शहरी विकास मंत्रालय ने इस आशय की घोषणा की है। मंत्रालय ने नये स्मार्ट शहरों की यह तृतीय सूची जारी की है। केन्द्र सरकार द्वारा की गयी इस उद्घोषणा से शिमला शहर के साथ-साथ सम्पूर्ण राज्य के निवासी भी प्रफुल्लित हैं। पहले शिमला को अमृत शहर की योजना के अन्तर्गत रखा गया था। स्मार्ट सिटी की घोषणा होते ही केन्द्र सरकार ने प्रथम चरण के तहत विकास के लिए 500 करोड़ रुपये जारी किए हैं। हिमाचल प्रदेश के दो शहर धर्मशाला और शिमला स्मार्ट सिटी की सूची में शामिल हो गए हैं। शिमला को भी स्मार्ट सिटी में शामिल करने के लिए राजनीतिक दलों ने केन्द्र से पूर्व में कई बार आग्रह किया था। ❖

कश्मीरी पंडितों की होगी सम्मानजनक वापसी: महबूबा

मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने मां क्षीर भवानी के दरबार में राज्य में शांति, सौहार्द और सुख समृद्धि की कामना की। उन्होंने वादी में एक बार फिर कश्मीरी पंडितों की सम्मानजनक वापसी का संकल्प दोहराया। शुक्रवार को गांदरबल के तुलमुला में मां क्षीर भवानी के वार्षिक मेले में मुख्यमंत्री पंडितों को व्यक्तिगत रूप से बधाई देने के लिए खुद पहुंची थी। उन्होंने पूजा अर्चना में हिस्सा लेने के बाद श्रद्धालुओं से मुलाकात की। मेला स्थल पर विभिन्न सरकारी एजेंसियों, स्वास्थ्य विभाग, जिला प्रशासन, फायर एंड इमरजेंसी सेवा और पुलिस के प्रबंधों का जायजा लिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह दिन ज्यादा दूर नहीं है जब यहां कश्मीर पंडित एक बार फिर सम्मानपूर्वक तरीके से सुरक्षित और सौहार्दपूर्ण वातावरण में घरों को लौट आएंगे। ❖

श्रीराम मंदिर के लिए मुस्लिम भी आगे आएं

द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य अच्युतानंद तीर्थ महाराज ने कहा है कि अयोध्या में श्रीराम मंदिर बनकर ही रहेगा। जमीन के भीतर श्रीराम मंदिर होने के सबूत मिले हैं। मुस्लिम समुदाय के लोगों को भी मंदिर की स्थापना के लिए आगे आना चाहिए। वह बुधवार को कांगड़ा में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा, गंगा को पवित्र बनाना हर भारतीय का कर्तव्य है। कहा कि उन्होंने गोमुख से बनारस व उत्तरकाशी से बनारस तक गंगा यात्रा कर इसे स्वच्छ बनाने की मुहिम चलाई है कोई भी शव गंगा में प्रवाहित नहीं किया जाना चाहिए। बकौल अच्युतानंद तीर्थ माहराज, पाक अधिकृत कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। जब पाक अधिकृत कश्मीर ही ले लेंगे तो धारा 370 खुद हट जाएगी। अगर देश के जवानों पर पत्थर बरसाए जाएंगे तो क्या वे चुप रहेंगे। उन्हें पत्थर का जवाब गोली से देना चाहिए। ❖

पेरिस समझौते पर भारत अडिग

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पेरिस समझौते से अलग हटने के फैसले का असर भारत की कूटनीति पर भी पड़ता दिख रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वैसे तो दो टूक कह दिया है कि भारत पेरिस समझौते में बना रहेगा। लेकिन, ट्रंप ने जिस तरह से चीन के साथ भारत का जिक्र किया है, उसे मोदी सरकार ने हल्के में नहीं लिया है। अमेरिका जाने की तैयारियों में जुटे मोदी की यात्रा पर भी इसका असर पड़ने की आशंका जताई जा रही है। मोदी फ्रांस के नए राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ होने वाली वार्ता में भी पेरिस समझौता एजेंडा में सबसे ऊपर रहेगा। मोदी ने सेंट पीटर्सबर्ग में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ मुलाकात के बाद वेदों का उदाहरण देते हुए कहा, 'भावी पीढ़ी के लिए खूबसूरत धरती छोड़ना हम सब की जिम्मेदारी है। भारत कार्बन उत्सर्जन के कड़े मानकों को स्वीकार करने के लिए वचनबद्ध है। पेरिस समझौते के पक्ष और विपक्ष में होने का सवाल ही नहीं है। ❖

किन्नौर में पूजित सावणियां

विश्व इतिहास पर दृष्टि डालें तो मालूम होता है कि समस्त मानव सभ्यताएं नदियों के आस-पास ही फली-फूली हैं और इन सदानीरा स्त्रोतस्विनी नदियों के अवलम्ब होते हैं श्वेत पर्वतश्रृंग। पौराणिक आख्यानों के अनुसार पर्वतों की उत्पत्ति सागर से मानी जाती है। आधुनिक भू-विज्ञानी पर्वतों का होना समय-साध्य, भू-चलन प्रक्रिया से हुई प्रतिक्रिया को मानते हैं। पृथ्वी की संरचना कई प्रकार की है, जैसे कहीं पर मीलों लम्बे समतल भू-भाग हैं तो कहीं विशाल रेगिस्तानी पठार और कहीं पर घने वन प्रदेशों से युक्त पर्वत श्रृंखलाएं। भारतभूमि जिसे भारतमाता के नाम से पुकारा जाता है, में भी भौगोलिक स्थिति मिश्रित रूप लिए हुए है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारतवर्ष में राज्यों का गठन वहां की भौगोलिक स्थितियों, बोली-भाषा और वहां के इतिहास के आधार पर हुआ। इसी क्रम में हिमाचल प्रदेश भी अस्तित्व में आया। इस पहाड़ी प्रदेश के बारह जिलों में एक जिला है किन्नौर। इस जिले में बहने वाली सतलुज नदी के दोनों ओर निवास करने वाले लोगों को खुन-पा, कनोरिंग, कनोरिया और कन्नौरा आदि नामों से अभिहित किया जाता है। यहां पर देव-मंदिर एवं मठ का सांझा स्वरूप देखा जा सकता है। प्रत्येक गांव में देव-मंदिर एवं मठ विद्यमान हैं। सभी ग्राम वासी अपने-अपने देवी-देवताओं की स्थानीय परम्परानुसार पूजा अर्चना करते हैं। यहां पर सनातन परम्पराओं के साथ लोक परम्पराओं की ज्यादा महत्ता है।

किन्नौर की ऊंची पर्वत चोटियों पर निवास करने वाली सावणियां, पर्वतीय देवियां यहां पर विशेष पूज्य हैं। इन देवियों को सावणी, सोनिक लामोचेऽपी, लामोशाऽपि, शुमाचो तथा देव-पुत्रियां आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। ये देवियां जन बस्तियों से दूर पर्वतों की ऊंची चोटियों पर निवास करती हैं। कहा जाता है कि ये देवियां बहुत ही कठोर अनुशासन पसन्द करती हैं। इन्हें किसी भी तरह का शोर या हल्ला-गुल्ला जरा भी पसन्द नहीं है। इनके निवास स्थानों से किसी भी पेड़ का काटना तो दूर फल, फूल और पत्तियां तक नहीं तोड़ी जा सकती। ये देवियां स्थानीय महिलाओं की सुन्दरता से भी ईर्ष्या करती हैं। कोई भी महिला काला दोहडू पहन कर इनके निवास क्षेत्रों में नहीं जा सकती। सावणियों के नियमों की अवहेलना होने पर वे कुपित हो जाती हैं। फलस्वरूप किसी की जान भी जा सकती है। सावणियों को प्रसन्न करने के लिए त्यौहारों का आयोजन किया जाता है। ये त्यौहार कहीं 'लापोच', कहीं 'सुस्कर' तो कहीं 'फागुल' या 'फागुली' नाम से मनाए जाते हैं। त्यौहारों के समय में देवियां अलग-अलग गांव में पूजा ग्रहण करने आती हैं। देवियां एक दूसरे के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करती हैं। त्यौहारों के समय सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। माहौल में पूरी तरह से शान्ति बनाए रखी जाती है। पूजा से संबंधित सारी सामग्री पहले ही एकत्रित कर ली जाती है। सभी घरों में विविध पकवान बनाए जाते हैं। 'फागुल' त्यौहार सात दिनों तक मनाया जाता है। हर रोज नए-नए पकवान बनाए जाते हैं। ग्रामीण अपने घरों की लिपाई-पोताई में लाल मिट्टी का प्रयोग करते हैं। उस पर सफेद मिट्टी से कई प्रकार की चित्रकारी भी करते हैं। त्यौहार के शुरू में ही देवियों को पकवानों का भोग लगाने के लिए कुछ घरों में एक घड़ा स्थापित कर दिया जाता है। प्रतिदिन बनाया गया खास पकवान भोग के रूप में स्थापित घड़े में रख कर देवियों को अर्पित किया जाता है। उत्सव के दौरान प्रतिदिन अलग-अलग तरह के पकवान तैयार कर इन देवियों को भोग लगाया जाता है। इस अवसर पर गाया जाने वाला एक गीत की पंक्ति है- फागुली जुगे छड्ड् वशो, गोयने कब्शो.....। अर्थात्-फागुली का त्यौहार शुरू है, बच्चे प्रसन्न हैं और गृहणियां रो रही हैं। इसका भाव है कि फागुली उत्सव में महिलाओं को नित नए पकवान बनाने के लिए अधिक काम करना पड़ता है। फागुली उत्सव के पांचवे दिन, सावणियों को भोग अर्पित करने के लिए रखे गए घड़े को फोड़ने की रस्म निभाई जाती है जिसे 'हण्डपोल' कहा जाता है। घड़े को सावधानी पूर्वक घर के बाहर निकाला जाता है। इस अवसर पर घर के सभी सदस्य मुट्ठी भर मूढ़ी लेकर अपने सिर से वार कर घड़े में डालते हैं, विश्वास है कि इससे साल भर के लिए आने वाले कष्टों का निवारण हो जाता

है। घट फोड़ने की प्रक्रिया करते समय सावणियों के स्तुति गीत गाए जाते हैं, जिससे सावणियों को प्रसन्न रखकर किसी के जीवन को संकट मुक्त किया जा सके। घट फूट जाने पर एकत्रित लोग प्रसाद पाने के लिए विशेष प्रयास करते हैं। प्रसाद से प्राप्त पकवान से घर में होने वाली सुख समृद्धि का अंदाजा लगाया जा सकता है। इस अवसर पर महिलाओं की उपस्थिति वर्जित रहती है। उत्सव के छठे दिन लोग सज-धज कर स्थानीय देवता के खेत (जिसे छण्डोल रिम कहते हैं) में बिना वाद्य यन्त्रों के माला नृत्य करते हैं। सातवें दिन सावणियों को विदाई दी जाती है। इसको 'सावणी सान्यामो' कहा जाता है। फागुली उत्सव से मालूम होता है कि किन्नौर जनपद में सावणियां कितनी पूज्य और सम्मानित देवियां हैं। विशेष बात यह है कि स्थानीय लोग इस उत्सव को बड़ी श्रद्धा, उल्लास और पारम्परिक तरीके से मनाते हैं। ❖

भाषा-गणित में अव्वल हिमाचल

एजुकेशन ऑफ स्टेट्स रिपोर्ट के वार्षिक सर्वेक्षण के अनुसार हिमाचल प्रदेश को भाषा व गणित दक्षता में सभी राज्यों में प्रथम आंका गया है। हिमाचल प्रदेश में न केवल दूसरी के विद्यार्थियों में अच्छी तरह से पढ़ पाने वाले बच्चों की दर सर्वाधिक है, बल्कि पांचवीं के विद्यार्थियों में कहानियों को पढ़ पाने वाले बच्चों की संख्या के आधार पर भी प्रथम स्थान मिला है। पांचवीं श्रेणी में दक्षता के आधार पर हिमाचल देश को गणित विषय में भी प्रथम आंका गया है। प्रदेश ने केरल जैसे राज्य को भी पीछे छोड़ दिया है। रिपोर्ट के अनुसार भाषा में हिमाचल के सरकारी स्कूलों की उपलब्धि का स्तर 65.3 प्रतिशत है। यह 41.6 प्रतिशत की राष्ट्रीय दर से कहीं अधिक है। गणित में प्रदेश के सरकारी स्कूलों की उपलब्धि का स्तर 47.4 प्रतिशत है। यह 21.1 प्रतिशत की राष्ट्रीय दर से अधिक है। शिक्षा विभाग के मुताबिक राज्य की शिक्षा तथा देखरेख प्रणाली को पूरी तरह रूपांतरित किया गया है। पूर्व की तरह केवल बैठकों में शामिल होने की बजाय विभाग द्वारा राज्य तथा जिला स्तर पर प्रति माह महत्वूपर्ण जानकारी के आदान-प्रदान के लिए बैठकों का नियमित आयोजन करवाया जा रहा है। ❖ साभार: दैनिक जागरण

मुंबई में छाई शिमला की नेहा

शिमला के क्यारकोटी गांव की नेहा दीक्षित की आवाज का जादू मुंबई में भी चला है। नेहा मुंबई में एक रियलिटी शो में भाग ले रही हैं। वह शो के तीसरे राउंड में प्रवेश कर चुकी है। नेहा दीक्षित को बचपन से ही संगीत का शौक था। क्यारकोटी एक ऐसा गांव है, जहां पर सड़क की भी सुविधा नहीं है। वहां से बस के लिए करीब चार किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है, लेकिन नेहा ने कभी हार नहीं मानी, वह छुट्टी का इंतजार करती व घर से करीब 40 किलोमीटर दूर संगीत सीखने जाती। नेहा की प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई। नेहा अब जमा दो कक्षा में पढ़ती है। वह श्रेया घोषाल को अपना आदर्श मानती है। मशोबरा के कुलभूषण शर्मा ने नेहा को गायकी की बारीकियां सिखाई हैं। साथ ही शिमला के प्रेम प्रकाश शर्मा ने नेहा की आवाज सुनकर उसे गाने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके बाद नेहा दीक्षित के पिता राकेश शर्मा ने उसे शिमला के विनोद चन्ना के पास संगीत सीखने के लिए भेजा। वर्तमान में नेहा प्रेम प्रकाश निहल्टा से संगीत के गुर सीख रही है। नेहा एक गरीब परिवार से संबंध रखती है, उनके पिता राकेश शर्मा मजदूरी करते हैं। राकेश शर्मा का कहना है कि नेहा ने एक ऐसे परिवार और गांव का नाम रोशन किया है, जिसका अभी मूलभूत विकास भी नहीं हुआ है। ❖

वैदिक वर्ण व्यवस्था का सत्य

– चेतन कौशल, नूरपुरी

इस लेख का मुख्य प्रेरणा-स्त्रोत लाला ज्ञान चंद आर्य द्वारा लिखित ''वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप'' पुस्तक है। यह पुस्तक अपने आप में उनका एक हृदय स्पर्शी और अनूठा प्रयास है। पुस्तक में दर्शाया गया है – मानव शरीर के अवयव मुख-ब्राह्मण, बाहु-क्षत्रिय, उदर-वैश्य और पैर-शूद्र हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने शरीर से चारों वर्णों का दैनिक कार्य करते हुए ही आर्य है। मानव जाति के पूर्वज आर्य थे इसलिए समस्त मानव जाति मात्र आर्य पुत्र है। आर्य पुत्र जो कर्म करने के समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होते हैं, कार्य करने के पश्चात वे स्वयं आर्य हो जाते हैं। शारीरिक कार्य कर लेने के पश्चात शरीर के अवयव पैर अछूत या घृणित नहीं हो जाते हैं और न ही उन्हें कभी शरीर से अलग ही किया जा सकता है। वैदिक शूद्र, शिल्पकार या इंजीनियर भी अछूत या घृणित नहीं हो सकता। मुख, भुजा, पेट या पैर में किसी एक अवयव की पीड़ा संपूर्ण शरीर के लिए कष्टदायी होती है। वर्ण व्यवस्था में किसी एक वर्ण का कष्ट समस्त समाज के लिए असहनीय है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण कर्ममूलक हैं, जन्ममूलक नहीं। समाज में सभी आर्य एक समान हैं। उनमें कोई ऊंच-नीच अथवा छूत-अछूत नहीं है।

आर्य वेद मानते हैं। वे अपने सब कार्य वेद सम्मत करते हैं। आर्य वही है जो संकट काल में महिला, बच्चे, वृद्ध और असहाय के जान-माल की रक्षा करते हैं, सुरक्षा बनाए रखते हैं। ब्राह्मण वर्ण शेष तीनों वर्णों का पथ प्रदर्शक गुरू और शिक्षक है। वह उन्हें ज्ञान प्रदान करता है। क्षत्रिय वर्ण शेष तीनों वर्णों की रक्षा करके उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करता है। वैश्य वर्ण शेष तीनों वर्णों का कृषि-बागवानी, गौपालन, व्यापार से पालन-पोषण करता है। शूद्र वर्ण शेष तीनों वर्णों के लिए श्रमसाध्य शिल्पविद्या, हस्तकला द्वारा भांति-भांति की वस्तुओं का निर्माण, उत्पादन करके सुख सुविधा प्रदान करता है।

समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कर्मगत चार प्रमुख वर्ण हैं। वर्ण व्यवस्था में मनुष्य की जाति मानव है। जैसे गाय जाति को भैंस या भैंस जाति को कभी बकरी नहीं बनाया जा सकता, उसी प्रकार मनुष्य जाति को किसी अन्य जाति का नहीं कहा जा सकता। ''वर्ण व्यवस्था में एक वयस्क लड़की को अपना मनपसंद वर चुनने का पूर्ण अधिकार है। जो उसे पसंद होने के साथ-साथ उसके योग्य होता है। लोभ से ग्रस्त, भ्रष्टचित होकर विपरीत वर्ण में विवाह करने से वर्णसंकर पैदा होते हैं, हो रहे हैं। जिससे सनातन कुल, वर्ण-धर्म का नाश होता है, हो रहा है। आत्मपतन होने के साथ-साथ समाज में पापाचार और व्यभिचार बढ़ता है, बढ़ रहा है।''-गीता

वर्ण व्यवस्था में मानव जीवन के कल्याणार्थ चार प्रमुख आश्रम हैं – ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम। वर्ण व्यवस्था के चारों आश्रमों में वेद सम्मत कार्य किए जाते हैं। ब्रह्मचर्याश्रम में गुरू विद्यार्थी को

वैदिक शिक्षा प्रदान करता है। गृहस्थाश्रम में विवाह, संतानोत्पत्ति, संतान का पालन-पोषण, शिक्षा और व्यवसाय आदि कार्य होते हैं। वानप्रस्थाश्रम में आत्मसुधार तथा ईश्वरीय तत्व का चिंतन मनन होता है और सन्यासाश्रम में जन कल्याणार्थ हितोपदेश दिया जाता है। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और सन्यासी किसी गृहस्थाश्रम में जाकर अपने खाने के लिए भिक्षाटन करते हैं, न कि वे खाने के लिए जीते हैं। वे गृहस्थ के कल्याणार्थ गृहस्थियों को उपदेश देते हैं। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और सन्यासी का जीवन सदाचारी, सयंमी, जप, तप, ध्यान करने वाला होने के कारण गृहस्थाश्रम पर निर्भर रहता है। वे ऐसा कोई भी कार्य नहीं करते हैं जिससे गृहस्थी को किसी प्रकार का कष्ट या उसकी कोई हानि हो। वर्ण व्यवस्था में सबके लिए कार्य करना, सबका अपने-अपने कार्य में व्यस्त रहना, आपस में मेल मिलाप रखना, आपसी हित-चिंतन, आवश्यकता पूर्ति, पालन-पोषण, रक्षण, एक दूसरे का सम्मान करना, प्रेम स्नेह रखना, महत्व समझना, ऊंच-नीच रहित स्वरूप, अधिकार, कर्तव्य और सहयोग को बढ़ावा देना अनिवार्य है। वेद सम्मत किया जाने वाला कोई भी कार्य जन कल्याणकारी होता है। उससे लोक भलाई होती है। वर्ण व्यवस्था गृहस्थाश्रम के लिए उपयोगी है। वह उसकी हर आवश्यकता पूरी करती है। वर्णों के कर्म गुण, संस्कार और स्वभाव अनुसार विभिन्न होते हैं। ब्राह्मण सहनशील और ज्ञानवान होता है तो क्षत्रिय विवेकशील तथा शूरवीर। वैश्य धनवान, मृदुभाषी और बुद्धिमान होता है तो शूद्र विद्वान, शिल्पकार और कर्मशील। एक वर्ण ऐसा कोई भी कार्य नहीं करता है जिससे दूसरे वर्ण को कष्ट अथवा उसकी किसी प्रकार की हानि हो। वर्णों का मूलाधार कर्मगत उनका अपना कार्यकौशल और सदाचार है। चारों वर्ण अपने-अपने गुण संस्कार और स्वभाव से जाने जाते हैं। ब्राह्मण तात्विक ज्ञान से जाना जाता है तो क्षेत्रिय बल-पराक्रम सें वैश्य धर्म कर्तव्य-परायणता से जाना जाता है तो शूद्र शिल्प-कला और कार्य-कौशल से। वर्णों में किसी एक वर्ण को दु:ख तीनों वर्णों के लिए अपना दु:ख होता है। मानो पैर में कोई कांटा लगा हो और हृदय, मस्तिष्क तथा हाथ उसे निकालने के लिए व्याकुल एवं तत्पर हो गए हों। समाज में मां-बाप तथा गुरू का स्थान सर्वोपरि है, वंदनीय है। जो बच्चे या विद्यार्थी उनका अपमान, निरादर या तिरस्कार करते हैं - वे दंडनीय हैं।

शिल्पकार शूद्र वर्ण भी उतना ही अधिक आदरणीय है जितना कि ज्ञानदाता ब्राह्मण वर्ण। शिल्पकार शूद्र वर्ण, ब्राह्मण वर्ण की तरह अपने कार्य में विद्वान होता है। समाज में मानव जाति को जाति, धर्म, लिंग, ऊंच-नीच भेदभाव उत्पन्न करके बांटना वेद विरूद्ध अपराध है। यज्ञ - श्रेष्ठ कार्य से हीन, मनन पूर्वक कार्य न करने वाला, व्रतों - अहिंसा, सत्य आदि मर्यादाओं के अनुष्ठान से पृथक रहने वाला, जिसमें मनुष्यत्व न हो, वह दस्यु, अपराधी है। दस्यु व अपराधी भी आर्य बन जाते हैं, जब वे वेद मानते हैं और वेद सम्मत कार्य करते हैं। आर्य भी दस्यु या अपराधी बन जाते हैं, जब वे वेद मानना भूल जाते हैं और वेद सम्मत कार्य नहीं करते हैं। दस्यु या अपराधी- वेद नहीं मानते हैं। वे वेद विरूद्ध कार्य करते हैं। समाज में जातियां उपजातियां उन लोगों की देन है जो वेद नहीं मानते थे। जो दम्भी, स्वार्थी एवं अहंकारी थे और जो इस समय उनका अनुसरण भी कर रहे हैं। पूर्व में स्थित हिमालय और उससे उत्पन्न गंगा, जमुना, कृष्णा, सरस्वती, नर्वदा, कावेरी, गोदावरी और सिंधु जिस भू-भाग से होकर बहती हैं, वह क्षेत्र आर्यवर्त है। जिस देश में नारी को नर की शक्ति, उसकी अर्द्धांगिनी और जग जननी मां मानने के साथ-साथ उसे पूर्ण सम्मान भी दिया जाता है, उस राष्ट्र को आर्यवर्त कहते हैं। आचार्य चाणक्य के अनुसार- ''जिसके पास विद्या नहीं है, न तप है, न कभी उसने दान ही किया है, न उसमें कोई गुण है और न धर्म, न उसके पास शीतलता ही है - वह मनुष्य इस मृत्युलोक में उस मृग के समान भार मात्र है जो पूरा दिन घास चराने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करता है।' ❖

विदेशों में देववाणी संस्कृत की गूंज

- नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार संस्कृत कई बीमारियों को दूर करने वाली भाषा।
- अंतरिक्ष में भी सुनाई दिए संस्कृत के शब्द... वैज्ञानिक आश्चर्य चकित।
- विदेशों के स्कूलों में अनिवार्य विषय (कम्पलसरी सब्जेक्ट) बनाया जा रहा है संस्कृत।

देवभाषा संस्कृत की गूंज अंतरिक्ष में सुनाई दी। इसके वैज्ञानिक पहलू जानकर अमेरिका नासा की भाषा बनाने की कसरत में जुटा हुआ है। इस प्रोजेक्ट पर भारतीय संस्कृत विद्वानों के इंकार के बाद अमेरिका अपनी नई पीढ़ी को इस भाषा में पारंगत करने में जुट गया है। गत दिनों आगरा दौरे पर आए अरविंद फाउंडेशन (इंडियन कल्चर) पांडिचेरी के निदेशक संपदानंद मिश्रा ने 'जागरण' से बातचीत में यह रहस्योद्घाटन किया कि नासा के वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने 1985 में भारत से संस्कृत के एक हजार प्रकांड विद्वानों को बुलाया था। उन्हें नासा में नौकरी का प्रस्ताव दिया था। उन्होंने बताया कि संस्कृत ऐसी प्राकृतिक भाषा है, जिसमें सूत्र के रूप में कम्प्यूटर के जरिए कोई भी संदेश कम से कम शब्दों में भेजा जा सकता है। विदेशी उपयोग में अपनी भाषा की मदद देने से उन विद्वानों ने इंकार कर दिया था। (संदर्भ

http://www.ibtl.in/news/international/1815/nasa-to-echo-sanskrit-in-space-website-confirms-its-mission- sanskrit/) इसके बाद कई अन्य वैज्ञानिक पहलू समझते हुए अमेरिका ने वहां नर्सरी क्लास से ही बच्चों को संस्कृत की शिक्षा प्रारंभ कर दी है।

नासा के 'मिशन संस्कृत' की पुष्टि उसकी वेबसाइट भी करती है। उसमें स्पष्ट लिखा है कि 20 साल से नासा संस्कृत पर काफी पैसा और मेहनत कर चुकी है। साथ ही इसके कम्प्यूटर प्रयोग के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा का भी उल्लेख है।

संस्कृत के बारे में आज की पीढ़ी के लिए आश्चर्यजनक तथ्य-

1. संस्कृत कम्प्यूटर में इस्तेमाल के लिए सबसे अच्छी भाषा। संदर्भ: फोर्ब्स पत्रिका 1987
2. सबसे अच्छे प्रकार का कैलेंडर जो इस्तेमाल किया जा रहा है, हिंदू कैलेंडर है (जिसमें नया साल सौर प्रणाली भूवैज्ञानिक परिवर्तन के साथ शुरू होता है) संदर्भ: जर्मन स्टेट यूनिवर्सिटी
3. संस्कृत में बात करने से व्यक्ति को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिल सकता है और बीपी, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल आदि जैसे रोगों में भी कमी आती है। संस्कृत में बात करने से मानव शरीर का तंत्रिका तंत्र सक्रिय रहता है जिससे, व्यक्ति का शरीर सकारात्मक आवेग (च्वेपजपअम बेंतहमे) के साथ सक्रिय हो जाता है। संदर्भ: अमेरीकन हिन्दू यूनिवर्सिटी (शोध के बाद)
4. संस्कृत भाषा है जो अपनी पुस्तकों वेद, उपनिषदों, श्रुति, स्मृति, पुराणों, महाभारत, रामायण आदि में सबसे उन्नत प्रौद्योगिकी (ज्मबीदवसवहल) रखती है। संदर्भ: रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी, नासा आदि।
   (नासा के पास 60,000 ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियाँ हैं जो वे अध्ययन में उपयोग कर रहे हैं)
5. दुनिया की सभी भाषाओं की माँ संस्कृत है। सभी भाषाएं (97:) प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस भाषा से प्रभावित है। संदर्भ: यूएनओ नासा वैज्ञानिक द्वारा एक रिपोर्ट दी गई है कि, अमेरिका 6वीं, और 7वीं पीढ़ी के सुपर कम्प्यूटर संस्कृत भाषा पर आधारित बना रहा है, जिससे सुपर कम्प्यूटर अपनी अधिकतम सीमा तक उपयोग किया जा सके। परियोजना की समय सीमा 2025 (6 पीढ़ी के लिए) और 2034 (7वीं पीढ़ी के लिए) है, इसके बाद दुनिया भर में संस्कृत सीखने के लिए एक भाषा क्रांति होगी।
6. दुनिया में अनुवाद के उद्देश्य के लिए उपलब्ध सबसे अच्छी भाषा संस्कृत है। संदर्भ: फोर्ब्स पत्रिका 1985।
7. संस्कृत भाषा वर्तमान में ''उन्नत किर्लियन फोटोग्राफी'' तकनीक में इस्तेमाल की जा रही है। ❖

साभार : शाश्वत् राष्ट्रबोध

मुस्लिम देशों पर बैन को सुप्रीम कोर्ट पहुंचा ट्रंप प्रशासन

ट्रंप प्रशासन ने छह मुस्लिम बहुल देशों के नागरिकों की अमेरिका यात्रा को बैन करने वाले अपने विवादास्पद फैसले पर सुप्रीम कोर्ट से बहाली की मांग की है। निचली अदालत द्वारा फैसले पर रोक लगाने के बाद ट्रंप प्रशासन ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। ट्रंप प्रशासन के न्यायिक विभाग के प्रवक्ता ने बातया कि हमने सुप्रीम कोर्ट से सुनवाई करने की अपील की है और हमें भरोसा है कि देश को सुरक्षित रखने और हमारे समुदायों को आतंकवाद से बचाने के लिए ट्रंप का यह आदेश उनके कानूनी अधिकार क्षेत्र में है। कहा, राष्ट्रपति को आतंकवाद को प्रायोजित करने वाले देशों के लोगों को प्रवेश देने की आवश्यकता नहीं है, जब तक सुनिश्चित न हो कि उनसे सुरक्षा को कोई खतरा नहीं है। ❖ साभार: अमर उजाला

ईरानी संसद पर आईएस का हमला

कट्टरपंथी सुन्नी मुस्लिम समूह ने बुद्धवार को ईरान के संसद भवन और देश के क्रांतिकारी नेता अयातुल्लाह रूहोल्लाह खोमेनी के मकबरे पर फिदायीन हमला किया। इसमें दो सुरक्षा गार्ड समेत 12 लोग मारे गए और 39 घायल हो गए। आतंकी संगठन के तीसरे हमले को सुरक्षा एजेंसियों ने विफल कर दिया। हमले की जिम्मेदारी लेते हुए आईएस ने कहा कि उसने ही सुन्नी मुस्लिमों को उकसाया था।❖

कश्मीर घाटी में सोशल मीडिया से जुड़े जिहादी

जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा एजेंसियां आतंकियों और दहशतगर्दों से आमने-सामने की जंग तो लड़ ही रही हैं, लेकिन अब उनका सामना नए दुश्मन सोशल मीडिया जिहादियों से हो रहा है। ये जिहादी अपने बेडरूम में बैठकर सोशल मीडिया के जरिये अफवाह फैलाने और युवाओं को भड़काने का काम कर रहे हैं। वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारियों की मानें तो ये जिहादी कश्मीर घाटी में उपद्रव मचाने के लिए कंप्यूटर्स और स्मार्टफोन का इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसा वे कश्मीर के भीतर या बाहर, नजदीकी कैफे या फुटपाथ, देश या विदेश कहीं से बैठकर कर सकते हैं। सुरक्षा एजेंसियों को सबसे ज्यादा चिंता 29 जून को शुरू हुई अमरनाथ यात्रा की है। आशंका है कि यात्रा शुरू होने से पहले ही व्हाट्सएप, फेसबुक और ट्विटर आदि से जिहादी कश्मीर घाटी में सांप्रदायिक दंगे भड़का सकते हैं अधिकारियों का मानना है कि आने वाले दिनों में जम्मू-कश्मीर में अफवाहें फैलाई जा सकती हैं और इससे निपटने के लिए उनके पास अब ज्यादा समय भी नहीं बचा है। इसलिए सुरक्षा बलों को अलर्ट रहना होगा। चिंता का विषय यह भी है कि ऐसी सोशल चैटिंग पूरी दुनिया में कहीं से भी हो सकती है। ऐसे में आरोपियों को पकड़ना नामुमकिन है। ❖ साभार : **http//:www.jihadwatch.com**

कामयाबी का नया युग

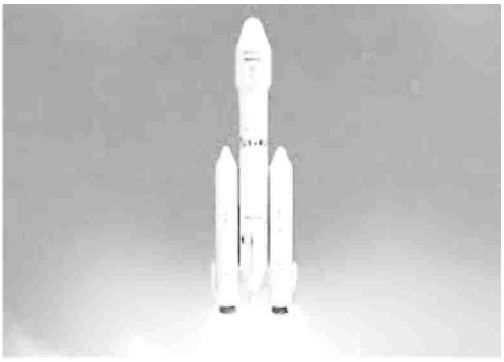

अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत ने एक और बड़ी कामयाबी हासिल की है। भारत के अंतरिक्ष मिशन में यह एक नए युग का आगाज़ है। इसरो ने जीएसएलवी मार्क-3 डी 1 रॉकेट का सफल प्रक्षेपण किया। इस रॉकेट से भारत ने संचार उपग्रह जीसैट-19 को उसकी कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया है। अकेला जीसैट-19 पुराने किस्म के छह से सात संचार उपग्रहों के बराबर काम कर सकता है। जीसैट-19 के कामकाज शुरू करने के बाद हम संचार उपग्रहों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो जाएंगे। लांचिंग के 16 मिनट बाद ही जीएसएलवी ने जीसैट-19 को कक्षा में स्थापित कर दिया। इस सफलता से भारत चार टन तक वजनी उपग्रह अंतरिक्ष में भेजने की क्षमता से लैस रॉकेट तकनीक रखने वाले चुनिंदा देशों में शामिल हो गया है। देश के सबसे ताकतवर और अब तक के सबसे भारी रॉकेट जीएसएलवी मार्क-3 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के दूसरे लांच पैड से प्रक्षेपित किया गया। रॉकेट में देश में ही विकसित क्रायोजेनिक इंजन लगा है। इस ऐतिहासिक प्रक्षेपण से चार टन श्रेणी के उपग्रहों को प्रक्षेपित करने की दिशा में भारत के लिए नए अवसर खुल गए हैं। ❖

कंचन को हंगरी में सम्मान

सातवें अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन में सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन दो से 11 जून तक जर्मनी, चेक, हंगरी, स्लोवाकिया व ऑस्ट्रिया में विश्व हिंदी साहित्य परिषद भारत द्वारा किया जा रहा है। इसमें भारत से कंचन शर्मा बतौर प्रतिनिधि जा रही हैं। उल्लेखनीय है कि विश्व हिंदी साहित्य परिषद हिन्दी के संवर्द्धन हेतु विश्व विख्यात है। हंगरी की राजधानी वुदापैस्त में स्थित अमृता शेरगिल सांस्कृतिक केंद्र में (आईसीसीआर) हिंदी के संवर्द्धन हेतु 'सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से हिंदी, कल आज और कल' पर कंचन शर्मा द्वारा शोध पत्र पढ़ा जाएगा। इसके साथ ही हंगरी में अंतरराष्ट्रीय कविता उत्सव में कंचन शर्मा कविता पाठ भी करेंगी। हंगरी में भारत के राजदूत राहुल छावड़ा कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। इस सम्मेलन में कंचन शर्मा बतौर विशिष्ट अतिथि शिरकत कर रही हैं। कंचन शर्मा प्रदेश के शिमला जिला से हैं व सिंचाई व जन स्वास्थ्य विभाग में बतौर सहायक अभियंता कार्यरत हैं। ❖

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

देश निकाला

जब जन्म लिया था
मैं ऐसी तो न थी
माँ की गोदी में थी जब तक
मैं बेटी ही तो थी।
मालूम नहीं कब बीत गये
बचपन के वो पल-छिन
फिर आया यौवन और
सपनों से वो दिन।
लोगों के घरों में लगा झाड़ू-बुहारी
और बर्तन घिस-घिस कर
गुजरी थी माँ की उमर सारी
वो रखती थी मुझको
दुनिया की नज़रों से बचा कर
पैबंद लगे कपड़ों में
मुझ को छुपा कर।
बापू को तो बस
अपनी बोतल थी प्यारी
फिक्र न था कि घर में हैं
तीन बेटियां कुंआरी।
पड़ोसी भी था पूरा छिछोरा
बेटी कहे और नजरों से
देह टटोले मुआ निगोड़ा
बातों ही बातों में कभी हाथ छुआ दे
फिर हँस के पीली बत्तीसी दिखा दे।
हद कर दी उसने
एक दिन जब वो बोला
आ जा घर में मेरे
बन मेरी लुगाई
और सांभ ले मेरी रसोई
घर आ कर मैं कितना रोई।
माँ खूब वाकिफ थी
मेरे दिल की बातों से
मगर थक चुकी थी वो
लड़-लड़ के हालातों से
वो बोली, वो नरक बेहतर है
इस नरक से बच्ची
गंवा लड़कपन मैं न सुहागन।
मगर भाग्य से भला
कौन जीत सका
उजड़ा मेरा सुहाग
एक फल था पका
जाते ही उसके सब की दृष्टि बदल गई।
अब न वो घर मेरा था
न ये घर मेरा
बिन मंजिल की राहें साथी
आगे पीछे घुप्प अंधेरा
ऐसे में जिसने बांह को थामा
वो निकला
बदनाम गली का एक चितेरा।
अब दिन हैं भारी
रातें काली
रोज चले सीने पर आरी
सपने रह गए टूट-टूट कर
प्रीत बह गई फूट-फूट कर
कोई अरमान रहा न
अब इस दिल में
बनी एक खिलौना
दुनिया की महफिल में।
कोई मुझे बताए
मुझसे क्या भूल हुई
मन की पीड़ा अब शूल हुई
क्या मैं भूखी मर जाती
अस्मत को कैसे मैं ओढ़ती
शर्म को मैं कहां बिछाती।
उजियारे में मुझसे वितृष्णा करने वाले
अंधियारे में खुद को कर दे मेरे हवाले
दुश्चरित्रों का मैं बनी निवाला
अपनों ने दिया मुझे
अपने घर से
देश निकाला। ❖

साभार: हिन्दयुग्म

खिलें फूल डाली-डाली

धर्मपरायण जो बन जाए,
ईशकृपा को वह ही पाए।
धर्म वही जो सबको जोड़े,
जाति-बंधन झट ही तोड़े।
ऊंच-नीच का भेद नकारे,
समरसता को नित स्वीकारे।
आत्मवत् सब को जाने,
सेवा-भाव मन में ठाने।
परोपकार की रीत निभाए,
गीत प्रेम के नित ही गाए।
सत्य-अहिंसा मंत्र उचारे,

तोड़ के लाए नभ से तारे।
पाखण्डवाद से दूर रहे,
समभाव से सुख-दु:ख सहे।
भले-बुरे की हो पहचान,
सात्विक रहे खान-पान।
सर्वोपरि हो राष्ट्रहित,
निष्कपट रहे सबका चित।
खिलें फूल डाली-डाली,
'प्रसाद' मनाए नित दिवाली। ❖

राम प्रसाद शर्मा, सिहाल, कांगड़ा

दुनिया में सबसे श्रेष्ठ है भारतीय गाय का दूध

– नथमल रिणवा

भारतीय गौवंश अर्थात देशी गााय का दर्शन भी आजकल गौहत्या के कारण दुर्लभ होता जा रहा है। कृत्रिम ढंग से विकसित विदेशी गायों का दूध ही आजकल अधिकांशत: उपयोग में लाया जा रहा है। विभिन्न देशों के द्वारा किये शोध तथा ''डेविल इन मिल्क'' नाम की पुस्तक में लेखक कीथ वुडफोर्ड ने सिद्ध किया गया है कि विदेशी ए-1 प्रोटीन वाली गायों का दूध मानव के लिए हानिकारक है। देशी गाय तथा विदेशी गाय में क्या गुण तथा अवगुण है, यह न तो गोपालकों को तथा न ही दूध पीने वाले लोगों को मालूम है। गोपालकों को इस तथ्य की जानकारी तो है कि ज्यादा दूध देने के कारण वे विदेशी नस्ल की गायों को प्राथमिकता देते है। जबकि हमारी भारतीय देशी गाय के दूध में ए-2 नामक प्रोटीन पाया जाता है जो माता के दूध के समान गुणकारी, पौष्टिक व सभी प्रकार की बिमारियों को रोकने में समर्थ है। पिछले कई दशकों के शोध ने यह सिद्ध कर दिया है कि विदेशी नस्ल की गायों का दूध प्रयोग करने से कई प्रकार की व्याधियां जैसे डायबिटीज टाईप-1, हार्टअटैक, मोटापा और कब्ज तथा क्षय रोग बहुत तेजी से बढ़ी हैं। हमारे देश में भी देशी और विदेशी गाय का संकरीकरण करने से हमारी गाय माता के नस्ल बिगड़ने पर दूध में ए-1 प्रोटीन बढ़ने लगा है। जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताया गया है। इससे न केवल शरीर की प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होती है बल्कि सहनशीलता की कमी आती है। विदेशी गाय तथा भारतीय गौवंश की आकृति और स्वभाव में काफी भिन्नता होती है जिसको समझने की नितांत आवश्यकता है।

भारतीय गौवंश देखने में सुन्दर व सींग वाला तथा इन के गले के नीचे लटकता हुआ गल कम्बल होता है। इनकी पीठ पर गोलाई लिए हुए ''कुकुद'' एक उठा हुआ भाग होता है। जिसमें सूर्य केतु नाड़ी होती है जो सूर्य से स्वर्ण (सोना) खींचकर दूध और पंचगव्य को स्वर्णयुक्त कर देती है। इस कारण हमारी गाय का दूध व घी में पीला सुनहरापन होता है। देशी गौवंश का दूध दही, घी, गौमूत्र और गोमय (गोबर) में स्वास्थ्य वर्धक पौषक तत्व एवं कीटनाशक गुण भी होते हैं। इनका दूध, दही व घी सुपाच्य होते हैं। मानव शरीर के लिए आवश्यक पौष्टिक तत्वों से भरपूर होता है। नवजात शिशु से लेकर बुर्जुग व्यक्ति भी इसके दूध को आसानी से पचा सकते हैं। दूध में विटामिन डी भी होता है जो हड्डियों को मजबूत बनाता है। देशी गौवंश जल्दी बीमार नहीं होता तथा चारा भी कम खाता है। देशी गाय का दूध पीने से सात्विकता बढ़ती है तथा स्मरण शक्ति तेज होती है। इनका दूध रोगों से लड़ने की क्षमता रखता है। इनका रम्भाना ममता भरा होता है।

विदेशी गाय की पीठ बिल्कुल सपाट होती है (सुअर की तरह) इनके सींग होते ही नहीं या बहुत छोटे होते है। इनका दूध और घी सफेद होता है तथा कई रोगों को जन्म देने वाला, इनके गल कम्बल नहीं होता इनका गोबर पतला होने के कारण कृषि खाद के लिए उपयोगी नहीं होता इनका गौमूत्र भी गुणहीन होता है। इनका शरीर स्थूल होता है तथा इनकी आवाज कर्कश होती है। यह धूप सहन नहीं कर सकती है। खूब चारा खाती है और जल्दी बीमार हो जाती है। इनका दूध सुपाच्य भी नहीं होता । इसके ए-1 प्रोटीन वाले दूध पर पलने वाले बच्चों में पाचन क्रिया सम्बन्धी रोग बढ़ सकते हैं ऐसे बच्चों में कब्ज की शिकायत ज्यादा रहती है। उपरोक्त तथ्यों से सिद्ध होता है कि ए-2 प्रोटीन वाली देशी गाय माता का दूध ही मानव शरीर के लिए सर्वोत्तम आहार है। जो पौष्टिकता देने के साथ-साथ बीमारियों से भी बचाता है। अत: हमारी गौ माता को बचाना हमारा धर्म तथा दायित्व है।

सनातन धर्म में गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्तिम संस्कार तक सभी में गौप्रदत पदार्थ और गोदान की आवश्यकता होती है। सनातन धर्म में मान्यता है कि मृत्यु के उपरान्त अगले जन्म के लिए वैतरणी नदी पार करनी पड़ती है, उसे गाय माता की पूंछ पकड़कर ही पार किया जा सकता है। इससे समझा जा सकता है कि न केवल इहलोक वरन परलोक तक गौमाता के माध्यम से ही मार्ग प्रशस्त होता है। अत: हिन्दू समाज के लिए गाय अत्यन्त पूज्य एवं धर्म भावना से जुड़ी है। गौवध होने पर मन में उत्तेजना पैदा होती है।

गाय माता जो अपने स्वस्थ एवं पौष्टिक दूध, दही, घृत आदि से हमारा पोषण करती है। जो अपने गोमूत्र एवं गोमय (गोबर) से दवा उपलब्ध कराकर हमें बिमारियों से बचाती है। अपने गोबर से उपजाऊ खाद तथा किसानों को बैल उपलब्ध करवाकर हमारी खेती की पैदावार बढ़ाकर हमारे परिवार को आर्थिक रूप से सम्पन्न करती है। अत: किसी के जीभ के स्वाद के लिए गोहत्या करना हिन्दू समाज की भावानाओं को भड़काने वाला है। अत: सरकार को हिन्दू भावना का सम्मान करते हुए यथाशीघ्र कानून बनाकर हमारी गाय माता को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाना चाहिए। ❖

जैविक खाद एवं इसका उपयोग

– डॉ. एन.के. वोहरा

जैविक या कार्बनिक खाद-वर्ग के अंतर्गत पशु-पक्षियों के मल-मूत्र या शरीर के अवशेष से अथवा पेड़-पौधों से प्राप्त होने वाले पदार्थ आते हैं। ऐसी खादों के प्रयोग से मिट्टी की भौतिक अवस्था में सुधार होता है, मृदा में ह्मस का निर्माण होता है तथा अणुजीवियों के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण बनता है। जैविक खाद विभिन्न प्रकार से बनाई जा सकती है।

बयान खाद: भारत में प्रयोग में आने वाली सभी जैविक खादों में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। पशुओं के मलमूत्र का महत्व तो आदिकाल से भारत के किसानों को ज्ञात रहा है परन्तु इस देश का दुर्भाग्य है कि आज भी करीब 60 प्रतिशत गोबर जलाने के काम आता है एवं खाद के रूप में प्रयुक्त होने वाला गोबर इस ढंग से रखा जाता है कि इसमें निहित पोषक-तत्व बड़ी मात्रा में नष्ट हो जाते हैं पशुओं के मूत्र के संश्रखण का भी कोई प्रबंध नहीं किया जाता। बयान खाद में निहित पोषक तत्वों की मात्रा पशुओं के प्रकार, पशुओं के बचारे, पशुओं की उम्र तथा खाद को रखने के ढंग आदि पर निर्भर करती है। ऐसी खाद बनाने के लिए प्रतिदिन सुबह गोबर एवं मूत्र से सनी बिचाली को अच्छी तरह मिलाकर 7 फुट लम्बी एवं 6 फुट चौड़ी तथा 3.5 फुट एक गहरी खाई में डाल देते हैं। जब खाद की ढेरी जमीन से डेढ़ फुट ऊंची हो जाए तो उसे गोबर मिट्टी से पीसकर पुन: आगे खाई भरते हैं। सामान्यत: इस खाई में खाद भरने के बाद दूसरी खाई में खाद भरना शुरू कर देते हैं। इस विधि से औसतन प्रति जानवर करीब 6-6 मीट्रिक टन खाद तैयार की जा सकती है। सड़ने-गलने के बाद जानवरों का मल-मूत्र एवं बिचाली 'बयान खाद' के रूप में परिवर्तित हो जाती है। सड़ने-गलने की इस प्रक्रिया मं बहुत से जीवाणु (कवक, बैक्टीरिया एवं एक्टिनोमाइसिटीज) भाग लेते हैं। इन जीवाणुओं में कुछ वायुजीवी होते हैं और कुछ अवायुजीवी। प्रक्षेत्रांगन या बयान खाद तैयार करने की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इन जीवाणुओं के लिए अनुकूल परिस्थिति पैदा की जाए।

मित्र खाद या कम्पोस्ट खाद: इस प्रकार की खाद पेड़-पौधों की पत्तियों, जड़ों या अन्य किसी प्रकार के वास्तविक अवशेषों या मल, कूड़ा-कचरा एवं अन्य बेकार चीजों को खादर के ढेर में रखकर सड़ाने-गलाने से बनती है। इस क्रिया में पोषक तत्व इस रूप में बदल जाते हैं कि पौधे आसानी से उन्हें ग्रहण कर सके। कम्पोस्ट खाद तैयार करते समय इतनी गर्मी पैदा होती है कि मल-मूत्र, कूड़ा-कचरा, गंदा पानी आदि में हरने वाले हानिकर रोगाणु मर जाते हैं तथा निरापद एवं गंधरहित उत्तम खाद तैयार होती है। कम्पोस्ट खाद को तैयार करने की इंदौर विधि में सड़ाने-गलाने की क्रिया वायुजीवी जीवाणुओं द्वारा होती है जबकि बेंगलूर विधि में वायुजीवी एवं अवायुजीवी दोनों प्रकार के जीवाणु कार्य करते हैं।

खलियां: जैविक खाद के रूप में तिलहनी फसलों की खलियों का प्रयोग कर सकते हैं। इन फसलों के बीज में बड़ी मात्रा में प्रोटीन रहता है जिसमें 9 प्रतिशत नाइट्रोजन रहता है। तिलहनों के बीच से तेल निकालने के बाद बची खची खली नाइट्रोजनयुक्त खाद का कार्य कर सकती है। खलियों में उपस्थित पोषक तत्व जैविक योगियों के रूप में रहते हैं तथा खलियों का मिट्टी में विघटन होने पर भूमि को उपलब्ध हो जाते हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रकार की जैविक खादों से भूमि की उर्वरता बिना किसी हानिकारक प्रभाव के बढ़ाई जा सकती है। ❖

साभार: पंजाब केसरी

सेल SAIL

सशक्त भारत
फौलादी इस्पात

सेल ने अपनी अत्याधुनिक प्रोद्योगिकी का उपयोग करते हुए राष्ट्रीय महत्व की कई परियोजनाओं में अपना योगदान दिया है और विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर अपनी सेवाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है. जैसे

रेल रक्षा • अभियांत्रिकी • ऑटोमोबाइल • अंतरिक्ष की खोज
ऊर्जा आधारभूत • संरचना • निर्माण • परिवहन

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED

हर किसी की ज़िन्दगी से जुड़ा हुआ है सेल

www.sail.co.in

SIDDHARTHA ADVERTISING

https://www.facebook.com/SAILsteelofficial/ https://twitter.com/SAILsteel https://www.instagram.com/steelauthority/

मानवाधिकार एवं महिलाएँ

-डॉ. अर्चना गुलेरिया

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर ही अपना सर्वांगीण विकास करता है। ये तब ही सम्भव हो सकता है जब उसे कुछ अधिकार प्राप्त हों और वह अपनी अंतर्निहित शक्तियों का प्रदर्शन कर सकें। मानव अधिकारों की धारणा मानव गरिमा की धारणा से जुड़ी है। अत: जो अधिकार मानव गरिमा को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं, इन्हें मानव अधिकार कहा जाता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 10 दिसम्बर 1948 को मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की थी। मानव अधिकार अन्तर्राष्ट्रीय विधि का विषय है। इन्हें व्यक्ति की राष्ट्रीयता पर और राज्य की घरेलू या आन्तरिक अधिकारिता तक सीमित नहीं किया जा सकता है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में सामान्यत: मानवाधिकारों के प्रति आम जनता में जागरूकता का अभाव-सा परिलक्षित होता है। फलत: शोषण, अन्याय, उत्पीड़न, अत्याचार, लोगों के अधिकारों का हनन आदि सामान्य रूप से देखा जाता है। प्रत्येक स्थल एवं प्रत्येक प्रकार की महिला विरोधी हिंसा के लिए समाज और राज्य दोनों को ही अपना नैतिक एवं विधिक उत्तरदायित्व निभाना चाहिए। नारी समाज का एक अभिन्न अंग है। अतीत से नारी का समाज में सर्वोपरि स्थान रहा है। उसे सुख और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। परन्तु गत वर्षो में महिलाओं के मानवाधिकारों का जितना उल्लंघन हुआ है, शायद पहले कभी नहीं हुआ।

महिलाओं के प्रति हिंसा विश्वव्यापी घटना बनी हुई है जिससे कोई भी देश कोई भी समाज एवं कोई भी समुदाय मुक्त नहीं है। महिलाओं के प्रति भेदभाव इसलिए विद्यमान है क्योंकि इसकी जड़ें सामाजिक प्रतिमानों एवं मूल्यों में जमी हुई है और वे अन्तर्राष्ट्रीय करारों के परिणामस्वरूप परिवर्तित नहीं होते हैं।

उल्लेखनीय है कि महिलाओं के प्रति निर्दयता को उच्चतम न्यायालय ने एक निरन्तर अपराध माना है। अभी हाल ही में उच्चतम न्यायालय के 'निर्भया' केस फैसले ने समस्त भारतवर्ष में संदेश दिया है कि इस तरह के अपराधों में संलिप्त किसी भी व्यक्ति को समाज में जीने का अधिकार नहीं है।

संविधान के अनुच्छेद 15 में यह प्रावधाान किया गया है कि धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर किसी नागरिक के साथ विभेद नहीं किया जाएगा। अनुच्छेद 16 लोक नियोजन में महिलाओं को भी समान अवसर प्रदान करता है। समान कार्य के लिए समान वेतन की व्यवस्था की गई है। हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 की धारा 18 स्त्रियों को सम्पत्ति में मालिकाना हक प्रदान करती है। श्रम कानून महिलाओं के लिए संकटापन्न यंत्रों तथा यंत्रों में कार्य से निषेध करते हैं। मातृत्व लाभ अधिनियम कामकाजी महिलाओं को प्रसूति लाभ की सुविधाएं प्रदान करता है। दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 125 में उपेक्षित महिलाओं के लिए भरण-पोषण का प्रावधान किया गया है। एक प्रकरण में तो उच्चतम न्यायालय द्वारा यहाँ तक अभिनिर्धारित किया गया है कि विवाह शून्य एवं अकृत घोषित हो जाने पर भी हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 25 के अन्तर्गत महिला भरण-पोषण पाने की हकदार होती है। इस प्रकार कुल मिलाकर नारी विषयक मानवाधिकारों को विभिन्न विधियों एवं न्यायिक निर्णयों में पर्याप्त संरक्षण प्रदान किया गया है।

बदलते परिवेश में संविधान के 12वें संशोधन द्वारा अनुच्छेद (51क) के अर्न्तगत नारी सम्मान को स्थान दिया गया है और नारी सम्मान के विरूद्ध प्रथाओं का त्याग करने का आदर्श अंगीकृत किया गया है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग तथा राष्ट्रीय महिला आयोग नारी सम्मान की रक्षार्थ सजग एवं सतत् प्रयासरत है। विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा महिलाओं के हित के लिए विभिन्न कार्यक्रम जैसे:- स्वाधार, स्वाबलम्बन, स्वशक्ति, स्वयंसिद्धा, आशा योजना, बालिका प्रोत्साहन योजना, अल्पावधि प्रवाह गृह, परिवार परार्मश केन्द्र, बालिका समृद्धि-योजना, जननी सुरक्षा योजना, किशोरी शक्ति योजना, राष्ट्रीय पोषाहार मिशन, स्वस्थ सखी योजना, अपनी बेटी अपना धन योजना, देवीरूपक योजना, बालिका संरक्षण योजना, आदि चलाए गए हैं। इन उदाहरणों से जाहिर है कि राज्यों द्वारा भी महिला कल्याण एवं विकास हेतु कदम उठाए जा रहे हैं। केन्द्र सरकार के सहयोग से इन्होंने अपने कार्यक्रमों को गति एवं जीवंतता प्रदान की है। इन सभी प्रयत्नों के फलस्वरूप आज की महिला पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलने में सक्षम है। पूरे विश्व में आज इस तरह के परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। अब वह दिन दूर नहीं कि महिलाओं की स्थिति पुन: वैदिक काल की स्थिति जैसी हो जाएगी। ❖

जर्मनी में मिली ३२ हजार वर्ष पुरानी 'नृसिंह' की मूर्ति

पुरातत्वविदों को यहां की एक गुफा में भगवान श्रीविष्णु के चौथे अवतार वाली 'नृसिंह' की 32 हजार वर्ष पुरानी मूर्ति मिली है।

कहा जा रहा है कि इस से सभी धर्मों में सनातन वैदिक हिन्दू धर्म का अनादि एवं सब से प्राचीन होने का और एक प्रमाण मिलता है। पश्चिमी पुरातत्वविदों के अनुसार यह मूर्ति किसी मंदिर की मुख्य देवता की मूर्ति है। नृसिंह भगवान ने भक्त प्रह्लाद की रक्षा हेतु उसके पिता एवं राक्षस हिरण्यकश्यप का वध किया। हिरण्यकश्यप को शिव ने वर दिया था कि उसे दिन में भी मृत्यु नहीं आएगी एवं रात्रि में भी नहीं। इसलिए भगवान नृसिंह ने सायं समय में उसका वध किया! इस मूर्ति की एक और विशेषता यह कि यह जर्मनी में मिलनेवाली अन्य साधारण मूर्तियों से भिन्न है। संगमरमर से बनाई गई यह मूर्ति जर्मनी में पाई गई बड़ी मूर्तियों में से एक है।❖

प्रदेश में योग दिवस के उपलक्ष्य हुए कार्यक्रमों की एक झलक

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2017 के अवसर पर शिमला हिमरश्मि सविम विकासनगर में योग करते हुए मंच पर विद्याभारती के पदाधिकारी, मेयर कुसुम सदरेट, पतंजलि योगसमिति के कार्यकर्ता व अन्य। ❖

इंग्लैंड में हिन्दू स्वयंसेवक संघ द्वारा खेल प्रतियोगिता

इंग्लैण्ड के हिन्दू स्वयंसेवक संघ द्वारा इस वर्ष बरमिघंम में खेल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया, जिसमें 27 शहरों की 67 टीमों के 5800 खिलाड़ियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में मुख्य रूप से कबड्डी, खो-खो और रिंग खेल रहे। इस अवसर पर इंग्लैंड की कबड्डी टीम के कप्तान सोमेश्वर कालिया ने कहा कि मैंने शाखा में ही

कबड्डी सीखी। शाखा से आत्मविश्वास, सामूहिकता एवं सहयोग की भावना का विकास होता हैं। इंग्लैण्ड के हिन्दू स्वयंसेवक संघ के प्रमुख धीरज शाह ने कहा कि यह टूर्नामेंट सामान्य से अधिक है। यह सामाजिक भावना व सामूहिक प्रयास का मंच है। यही हिन्दू स्वयंसेवक संघ की मूल भावना है।❖

चीन के पहले योग कॉलेज की छात्रों में धूम

कुछ महीनों के भीतर ही भारत-चीन योग कॉलेज ने चीनी छात्रों के बीच धूम मचा दी है। लोकप्रियता का आलम यह है कि अब तक तकरीबन तीन हजार छात्र योग की मुफ्त क्लास में हिस्सा ले चुके हैं। पिछले साल मई में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चीन यात्रा के दौरान योग कॉलेज खोलने और कम से कम दो योग शिक्षक मुहैया कराने पर सहमति बनी थी। यह योग कॉजेल नवंबर में कुनमिंग प्रांत के युन्नान मिंजु युनिवर्सिटी में खोला गया था। ❖

जम्मू कश्मीर के दो चेहरे

– डा० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

जम्मू कश्मीर के दो युवकों की चर्चा आजकल सब जगह हो रही है। बड़गाम का फारुख अहमद डार और गिलगित बाल्टिस्तान का बाबा जाहन। दोनों सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे। फर्क महज इतना है कि फारुख अहमद डार बड़गाम के एक मतदान केन्द्र पर पत्थरबाजों की जमात को भड़का रहा था और बाबा जान कराकोरम मार्ग पर शान्ति से प्रदर्शन कर रहा था। पहले फारुख अहमद डार का किस्सा ।

पिछले महीने अप्रैल मास में देश के कुछ राज्यों में विधान सभा और लोकसभा की कुछ रिक्त हुई सीटों के लिए उपचुनाव हुए थे। इनमें से एक सीट जम्मू कश्मीर में श्रीनगर भी थी। श्रीनगर लोकसभा सीट पर भी 9 अप्रैल 2017 को मतदान हुआ था। उस दिन मतदान केन्द्रों की सुरक्षा के लिए अर्ध सैनिक बल के कुछ जवान तैनात थे। एक मतदान केन्द्र में मामला ज्यादा उग्र हो गया और स्थानीय अधिकारियों के हाथ से निकलने लगा। उग्र भीड़ ने मतदान केन्द्र को घेर लिया था। पत्थर फेंकने वालों की ब्रिगेड पहले ही तैनात थी। लगभग बारह सौ लोगों की यह आक्रमक भीड़ पेट्रोल बमों से मतदान केन्द्र को जलाने की कोशिश में उग्र हो रही थी। चारों ओर से पत्थर फेंके जा रहे थे। इतना ही नहीं घरों की छत्तों से भी पत्थर बरसाए जा रहे थे। मतदान केन्द्र के कर्मचारियों और सुरक्षा कर्मियों की जान खतरे में पड़ गई तो उनको वहाँ से सही सलामत निकालने का सवाल पैदा हुआ। इसके लिए सेना की सहायता माँगी गई।

मेजर गोगोई के नेतृत्व में सैनिकों का एक जत्था मतदान केन्द्र पर पहुँचा। स्थिति अत्यन्त गंभीर थी। लेकिन असम के रहने वाले मेजर गोगोई न तो जम्मू कश्मीर और नैशनल कान्फ्रेंस की इस दशकों पुरानी राजनीति के विशेषज्ञ थे और न ही उन्हें यह जानने की जरुरत थी। वे तो सीमा पर शत्रु का सफाया किस प्रकार किया जाना चाहिए, इस काम में महारत हासिल किए हुए थे। लेकिन इस मतदान केन्द्र पर वे अपनी इस महारत का भी उपयोग नहीं कर सकते थे। क्योंकि उनके सामने शत्रु देश के लोग नहीं थे बल्कि अपने देशवासी ही खड़े थे। खून की एक बूँद भी बहाए बिना और एक भी गोली चलाए बिना सभी को सही सलामत वहाँ से निकालना था। लेकिन कैसे? गोगोई के सामने आपद धर्म को चुनने का रास्ता था। यह सामान्य काल का धर्म नहीं होता। इस आपातकाल में सामान्य काल के नियम लागू नहीं होते। इसका मुकाबला करने के लिए असामान्य रास्ता और तरीका अपनाना पड़ता है। आपद धर्म निभाने की जरुरत सभी लोगों को नहीं होती। उसकी जरुरत उसी को होती है जो आपदा में फँसा होता है। आपत काल में ही धर्म निभाना सबसे ज्यादा मुश्किल होता है। लेकिन आपद काल उपस्थित हो गया है? इसका निर्णय कौन करेगा? यकीनन मौके पर खड़ा व्यक्ति ही इसका निर्णय करेगा। उसे स्वविवेक से ही काम लेना होगा।

मेजर गोगोई के सामने स्थिति से निपटने का एक रास्ता तो बहुत सीधा था। वे गोली चलाते और बंधक बनाए हुए मतदान अधिकारियों को वहाँ से छुड़ा लेते। वैसे भी सिविल प्रशासन सेना को तभी बुलाता है जब स्थिति नियंत्रित करने के उसके बाकी सब उपाए फेल हो चुके होते हैं। मेजर गोगोई को इसी प्रकार की परिस्थिति को संभालने के लिए बुलाया गया था। गोलीबारी में हो सकता भीड़ के वेश में छिपे आतंकवादी भी गोली चलाते। लेकिन इससे वहाँ बकौल मेजर गोगोई दस बारह लाशें जरुर गिर जातीं । उससे ज्यादा लोग भी मारे जा सकते थे। गोली से मारना बहुत आसान विकल्प है लेकिन गोगोई की चिन्ता तो वहाँ होने वाले नर संहार को किसी भी तरह टालने की थी।

भीड़ उग्र होती जा रही थी। क्षण भर में कुछ भी हो सकता था । गोगोई को कोई ऐसा तरीका तलाशना था जिससे बिना किसे को मारे मामला काबू में आ जाए? उस समय वह तरीका तलाश करने के लिए वहाँ किसी लम्बी मीटिंग या सेमीनार आयोजित करने का विकल्प उपलब्ध नहीं था ताकि एमनेस्टी इंटरनैशनल और देश भर में मानवाधिकारों का अध्ययन कर रहे गंभीर विद्वानों, समाचार पत्रों के स्तम्भ लेखकों, नेशनल कान्फ्रेंस के प्रतिनिधियों को बुला कर कार्यवाही के लिए ठोस विकल्प तलाशे जा सकते। जो कुछ

करना था मेजर गोगोई को ही करना था और वह भी तुरन्त करना था। फारुक अब्दुल्ला ने कुछ दिन पहले अपने कार्यकर्ताओं को हुर्रियत कान्फ्रेंस के साथ मिल कर आजादी के लिए संघर्ष करने के लिए कह ही दिया था। इसलिए पत्थरबाजों की उस भीड़ में कितने नेशनल कान्फ्रेंस के कार्यकर्ता थे, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल था। नैशनल कान्फ्रेंस की नई रणनीति ने उसके कार्यकर्ताओं को एक साथ दोहरी भूमिका में लाकर खड़ा कर दिया था। उन्हें वोट भी डालना था और पत्थर भी फेंकना था । वे एक साथ ही पत्थरबाज और मतदाता की भूमिका में आ गए थे।

गोगोई के मन में क्षण भर में एक विचार कौंधा। उसने तुरन्त पत्थरबाजों को उकसा रहे एक लड़के को (जो फारुख अहमद डार था) पकड़ कर जीप के बोनट पर बाँध देने का आदेश दिया । फारुख अहमद डार पत्थर फेंकने वालों को उकसा रहा था और सेना की जीप के पास पहुँच गया था। फारुख अहमद डार ने भागने की कोशिश की। वह अपने मोटर साईकिल तक पहुँच भी गया था। लेकिन सेना के जवानों ने किसी तरह उसको पकड़ लिया और जीप के बोनट पर बिठा दिया। पत्थर चलाने वालों ने पत्थर चलाने बन्द कर दिए। भीड़ में से किसी आतंकवादी द्वारा गोली चलाए जाने का खतरा भी टल गया था। क्योंकि इस गोलीबारी में जीप पर बँधे फारुख अहमद डार की मौत भी हो सकती थी। लेकिन वह तो पत्थर फेंक पलटन का अपना आदमी था। इस लिए अब न गोली चलेगी न पत्थर चलेगा। मेजर ने मतदान केन्द्र से बिना एक भी गोली चलाए सभी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। हुर्रियत कान्फ्रेंस, अलगाव वादियों और आतंकवादियों की रणनीति असफल हो गई। नैशनल कान्फ्रेंस की फेल हुई या नहीं यह तो फारुख और उमर अब्दुल्ला ही बेहतर जानते होंगे।

अब जम्मू कश्मीर के ही एक दूसरे सपूत बाबा जान की बात की जाए। उसका किस्सा फारुख अहमद डार जितना सीधा और सरल नहीं है। वह कुछ पेचीदा है। लेकिन उसको समझना भी जरुरी है। जनवरी 2010 में गिलगित बाल्तीस्तान में अत्ताबाद के स्थान पर हुंजा नदी का प्रवाह रुक गया था क्योंकि पहाड़ का एक बडा हिस्सा उसमें गिर गया था जिसने नदी का प्रवाह रोक दिया था। उससे बनी झील में अनेकों गाँव डूब गए थे और हजारों लोग बेघर हो गए थे। हुंजा का बड़ा शहर अली आबाद एक प्रकार से तबाह हो गया। पानी रुकने से अत्ताबाद झील ही बन गई। 11अगस्त 2011 को इस दुर्घटना से प्रभावित लोग मुआवजे की माँग को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। बदकिस्मती से वे यह माँग कराकोरम सड़क पर खड़े होकर कर रहे थे। यह वही कराकोरम मार्ग है जिसे चीन सरकार ने बनाया है। ऊपर से कोढ़ में खाज यह कि उस सड़क पर से उसी समय सैयद मेहंदी शाह गुजरने वाले थे। ये सैयद अहमद शाह उन अरब-इरानियों के कुनबे में से हैं जो सैकड़ों साल पहले जम्मू कश्मीर को जीतने के लिए यहाँ आए थे। सैयद साहिब को पाकिस्तान सरकार ने गिलगित बल्तीस्तान का मुख्यमंत्री बनाया हुआ था।

चीन की बनाई हुई सड़क और उस पर सैयद साहिब की सवारी और उसमें दीवार बन कर खड़े गिलगित बल्तीस्तान के पहाड़ी लोग! लाहौल बिला कुव्वत! ऐसे मौके पर गोली चलाना तो बनता है। इसी तर्क से गोली चली और दो उसकी बलि चढ़ गए। दोनों बाप बेटा थे। प्रदर्शन के समय बाबा जान वहाँ नहीं था। हुंजा घाटी के नसीराबाद का रहने वाला बाबा जान गिलगित बाल्टिस्तान की अवामी वर्कर्ज पार्टी की केन्द्रीय समिति का सदस्य है। प्रगतिशील युवा मोर्चा का प्रधान है। ये दोनों संगठन गिलगित बाल्टिस्तान में कम्युनिस्ट विचारधारा के लिए जाने जाते हैं। बाबा जान ने इस गोलीकांड के बाद इसकी जाँच करवाने, प्रभावितों को मुआवजा देने की माँग को लेकर शान्तिपूर्ण रैलियाँ और प्रदर्शन आयोजित करने शुरु किए धीरे-धीरे सारा मामला गिलगित-बाल्टिस्तान बनाम पाकिस्तान बनता गया और पहाड़ी लोग बाबा जान के साथ सड़कों पर उतर आए। पुलिस ने बाबा जान को निशाना बना लिया। ❖

डलहौजी की शिखा सिविल सर्विस परीक्षा में छाई

डलहौजी की शिखा ने सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण कर पूरे देश में नाम कमाया है। इस परीक्षा के घोषित अंतिम परिणाम में शिखा ने 439वां रैंक हासिल कर क्षेत्र का ही नहीं, बल्कि प्रदेश का नाम भी रोशन किया है। शिखा ने तीसरे प्रयास में सिविल सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण की है। शिखा मूलरूप से डलहौजी की रहने वाली हैं। शिखा का विवाह अमृतसर (पंजाब) के जश्नदीप सिंह रंधावा से हुआ है, जो कि स्वयं आईपीएस अधिकारी हैं। शिखा के पिता बलदेव खोसला पीडब्ल्यूडी से सेवानिवृत्त हैं, जबकि माता प्रवेश खोसला गृहिणी हैं।, शिखा ने प्रारंभिक शिक्षा सेक्रेट हार्ट स्कूल डलहौजी से प्राप्त की है। इसके पश्चात शिखा ने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से बीडीएस करने के बाद लॉ में स्नातक की डिग्री भी हासिल की। शिखा ने बताया कि आईएएस अधिकारी बनना हमेशा से उनका सपना था। वह सपने के साकार होने जैसा है। सिविल परीक्षा की तैयारी के बारे में शिखा ने कहा कि कभी घंटे के हिसाब से पढ़ाई नहीं की, बल्कि एक निश्चित लक्ष्य बनाकर पढ़ाई करती थी। ❖

साभार : http//:www/upsc.gov.in

सरकाघाट का होनहार हिंदी नेट में सेकेंड टॉपर

सरकाघाट क्षेत्र के सरी गांव के रहने वाले सोनू कुमार ने हिंदी की राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा में देश भर में दूसरा स्थान हासिल किया है। सोनू कुमार का जूनियर रिसर्च फैलोशिप के लिए चयन हो गया है। इसके लिए केंद्रीय मानव संसाधन मंत्रालय की ओर से सोनू को 30 हजार रूपए प्रति माह स्कॉलरशिप दी जाएगी। इस उपलब्धि से सरी गांववासी गदगद हैं। सोनू के माता-पिता किसान हैं। सोनू की पढ़ाई का खर्चा उनके चचेरे भाई डॉ. धर्मपाल वहन कर रहे हैं। सोनू ने इस सफलता का श्रेय माता-पिता और भाई डॉ. धर्मपाल और शिक्षकों को दिया है। ❖

साभार : http//:ugc.ac.in

अखिल नेवी में अफसर

उपमंडल ज्वाली के अंतर्गत गांव खैरियां (दुराना) के अखिल कौशल ने नेवी में बतौर सब-लेफ्टिनेंट चयनित होकर प्रदेश भर में अपना व अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है। अखिल कौशल के पिता सुरेश कुमार ऑनरेरी कैप्टन रिटायर हुए हैं, जबकि माता कांति कौशल गृहिणी हैं। अखिल कौशल ने अपनी पढ़ाई की शुरूआत मानव भारती पब्लिक स्कूल नढ़ोली से की है तथा उसके उपरांत उनका चयन राष्ट्रीय आर्मी स्कूल बेलगांव (कर्नाटक) में हुआ। वहां पर 12वीं कक्षा में ही सर्विस सिलेक्शन कमीशन ने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) खड़गवासला पुणे के लिए उनका चयन कर लिया। उन्होंने जेएनयू दिल्ली से बीएससी (एससी) की डिग्री हासिल की। एनडीए से पासआउट होने के उपरांत उन्हें ट्रेनिंग के आखिरी पड़ाव के लिए भारतीय नौसेना अकादमी केरल में भेजा गया। अखिल कौशल आईएनए से बतौर सब-लेफ्टिनेंट चयनित हुए हैं। ❖ साभार : **http//:www.upsc.gov.in**

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)

Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma

MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

नकलची बन्दर

एक बार एक टोपी बेचने वाला अपनी ढ़ेर सारी टोपियों को लेकर बेचने जा रहा था, रास्ते में एक पेड़ के नीचे बैठ गया। थकान की वजह से उसे नींद आ गयी और सो गया। इतने में उस पेड़ पर रहने वाले बन्दर उसकी ढेर सारी टोपियाँ उठा ले गये। सबने पेड़ पर चारों तरफ टोपियाँ फैला दीं। इतने में उस टोपीवाले की नींद खुल गयी तो उसने देखा की सब बंदर उसकी टोपियाँ लेकर चले गये हैं। टोपियाँ माँगने के लिए आदमी बन्दरों को डराने लगा लेकिन इससे बन्दर और चिढ़ जाते तथा सभी बन्दर वैसा ही करते जैसा की टोपीवाला करता। इतने में उसने गुस्से में अपने सर की टोपी निकाल कर जमीन पर फेंक दी। ऐसा देखकर उन बंदरों ने भी नकल करके सारी टोपीयाँ नीचे फेंक दीं जिससे टोपीवाला अपनी सारी टोपियाँ फिर से पा गया। ❖

भालू और दो दोस्त

दो दोस्त जंगल के रास्ते से जा रहे थे कि अचानक उन्हें दूर से एक भालू अपने पास आता हुआ दिखा तो दोनों दोस्त डर गये। पहला दोस्त जो कि दुबला-पतला था वह तुरंत पास के पेड़ पर चढ़ गया जबकि दूसरा दोस्त जो मोटा था वह पेड़ पर चढ़ नहीं सकता था तो उसने अपनी बुद्धि से काम लेते हुए वह तुरंत अपनी सांस को रोकते हुए जमीन पर लेट गया और फिर कुछ देर बाद भालू वहाँ से गुजरा तो उस मोटे दोस्त को सूंघा और फिर कुछ समय बाद आगे चला गया। इस प्रकार उस मोटे दोस्त की जान बच गयी। तो इसके बाद उसका दोस्त उसके पास आकर पूछता है कि वह भालू तुम्हारे कान में क्या कह रहा था। दोस्ते बोला कि सच्चा दोस्त वही होता है जो मुसीबत के समय अपने काम आये। ❖

एकता की शक्ति

एक बहेलिया जंगल में पक्षियों को पकड़ने के लिए गया और पक्षियों को पकड़ने के लिए अपने जाल फैलाकर उस पर चावल के दाने बिखेर कर जंगल की झाड़ियो में छुप गया। इतने में झुण्ड में जाते हुए कबूतरों

को जंगल में चावल के दाने दिखे तो उन सभी के मुंह में पानी भर आया और चावल के दाने चुगने के लिए सभी नीचे उतरे तो उनमे मौजूद एक बुद्धिमान कबूतर को कुछ शक हुआ कि भला जंगल में ऐसे चावल के दाने कहाँ से आ गये। हो न हो इसमें कोई धोखा हो सकता है। उसके मना करने के बावजूद सभी कबूतर दाना चुगने लगे और इस तरह सभी कबूतर शिकारी द्वारा फैलाये जाल में फंस गये। जब सभी उड़ने की कोशिश करने लगे तो वे असफल रहे। बुद्धिमान कबूतर बोला दोस्तों अगर हम सभी एक साथ पूरी शक्ति लगाकर उड़ें तो निश्चित ही आप सभी इस जाल को लेकर उड़ सकते हैं। इसके बाद उन कबूतरों ने एक साथ पूरी ताकत से उड़ने लगे जिससे वे फंसे हुए जाल को लेकर उड़ने लगे, लेकिन पास में छिपा बहेलिया भी उनके पीछे दौड़ा। कबूतरों की एकता की शक्ति के पीछे वह असफल रहा और उन कबूतरों को पकड़ नही पाया। फिर उन कबूतरों ने अपने मित्र मूषकराज के पास पहुँच जाल काटने के बाद एक बार फिर से आजाद हो गये। इस प्रकार उनकी एकता की ताकत ने उन्हें बहेलिया की कैद में होने से बचा लिया। ❖

प्रश्नोत्तरी

1. संस्कृत व्याकरण 'अष्टाध्यायी' के रचियता कौन हैं ?
2. बौद्ध धर्म के संस्थापक कौन हैं ?
3. 'बुकर पुरस्कार' किस क्षेत्र में दिया जाता है?
4. 'वानखेड़े स्टेडियम' भारतवर्ष में कहाँ स्थित है?
5. बंगला देश की मुद्रा का नाम क्या है?
6. 'कम्प्यूटर' का अविष्कार किसने किया?
7. 'डेल्ही इन नॉन फॉर: ए नॉबल' के रचियता कौन है?
8. किस व्यक्ति को 'देशबन्धु' भी कहा जाता है?
9. विश्व की प्रथम महिला प्रधानमंत्री कौन थी?
10. 'भारत कोकिला' किसे कहा जाता है?

उत्तर:- 1. पाणिनी 2. महात्मा बुद्ध, 3. साहित्य के क्षेत्र में, 4. मुम्बई, 5. टका, 6. चार्ल्स बैबेज, 7. रॉबर्ट वाड, 8. सी०आर० दास, 9. सिरिमाओ भंडारनायके, 10. सरोजनी नायडू।

पहेलियाँ

- चार ड्राइवर एक सवारी, जिसके पीछे दुनिया सारी? बताओ क्या?
- बिना बुलाये डॉक्टर आये, सुई लगाकर भाग जाये ? बताओ क्या?
- ऊपर से नीचे बहता हूँ,
  हर बर्तन को अपनाता हूँ,
  देखो मुझको गिरा न देना
  वरना कठिन हो जाएगा भरना।

उत्तर : कुर्सी, मच्छर, पानी।

वर्तमान परिस्थितियों को दर्शाते कार्टून

HIM AGRO FOOD CORPORATION

Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

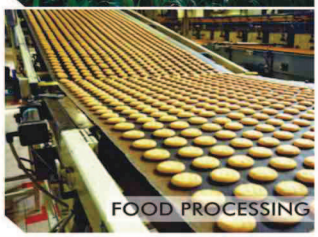

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A, CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

देश दुनिया को प्रभावित करने वाली हिन्दुत्व से जुडी विश्व की एकमात्र और विश्वसनीय हिन्दी न्यूज वेबसाईट

www.Hindutva.info

कोई लागलपेट नहीं सिर्फ पूरा सच

Share

- हिन्दूत्व के आधार को दर्शाती एकमात्र मल्टीमीडिया साईट जोकि है पूरे भारत में लोकप्रिय है।
- 1.5 करोड़ से भी ज्यादा फालोअरस।
- हिन्दू धर्म से जुडी पूरी जानकारी।
- राजनीति की तह तक जाने वाली सच्चाई पर आधारित खबरें व खुलासे।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।